प्रश्न बैंक-सह-उत्तर पुस्तक

Question Bank-Cum-Answer Book

2023

Class-10

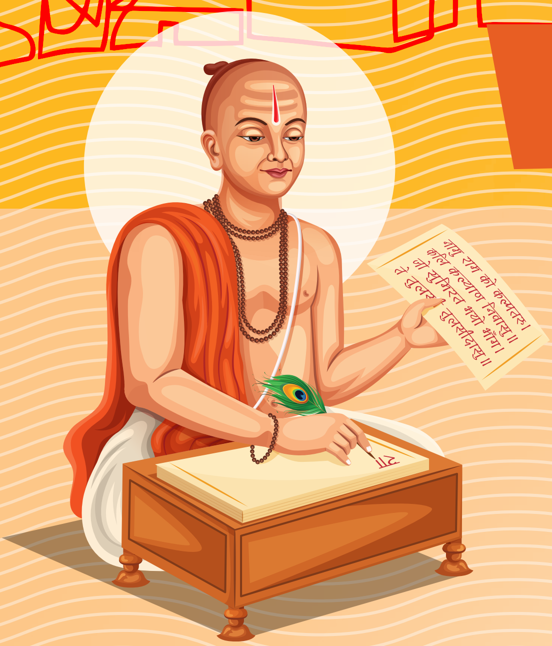

संस्कृत
(SANSKRIT)

✓ शेमुषी द्वितीयो भागः

झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची
Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi

Jharkhandlab.com

प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक

Question Bank-Cum-Answer Book

Class - 10

संस्कृत
Sanskrit

नवोन्मेष शोध नेतृत्व

JCERT

2023

झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi

Jharkhandlab.com

प्रथम संस्करण : माह अगस्त 2023, श्रावण विक्रम संवत् 2080

© झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड

Jharkhandlab.com

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, छायाप्रतिलिपि अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण या जिल्द के साथ अथवा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- **क्रय–विक्रय दण्डनीय अपराध**

झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड द्वारा प्रकाशित

प्राक्कथन

बच्चों के लिए निर्धारित अधिगम प्रतिफल प्राप्त करने का मार्ग सरल एवं सुगम होना आवश्यक है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड के द्वारा कक्षा 10 के सभी विषयों के लिए प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक का निर्माण बच्चों के अधिगम कौशल को सुगमतापूर्वक विकसित करने एवं झारखंड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक माध्यमिक बोर्ड की परीक्षा के लिए उन्हें तैयार करने के उद्देश्य से किया गया है। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में सरल भाषा एवं रुचिकर ढंग से विषय–वस्तु को स्पष्ट करते हुए प्रश्नोत्तर दिए गए हैं। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के माध्यम से बच्चों में न केवल ज्ञानजन्य प्रतिभा का विकास होगा बल्कि आज के इस प्रतियोगिता के दौर में भी वे अनुकूल सफलता पाएंगे। हमारे प्रयत्न की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि विद्यालय के शिक्षकवृन्द बच्चों की कल्पनाओं के साथ कितना जुड़ पाते हैं और विभिन्न प्रकार के प्रश्नोत्तरों को सीखने–सिखाने के दौरान अपने अनुभवों के साथ–साथ बच्चों के विचारों के साथ कैसे सामंजस्य बनाते हैं।

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में झारखंड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक माध्यमिक बोर्ड की परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों के विविध प्रकारों यथा– बहुवैकल्पिक, अतिलघु उत्तरीय, लघु उत्तरीय एवं दीर्घ उत्तरीय प्रश्न आदि के अंतर्गत पर्याप्त मात्रा में प्रश्नोत्तर समाहित किए गए हैं ताकि इसके अध्ययन से छात्रों में ना केवल विषय–वस्तु की समझ विकसित हो बल्कि उन्हें सीखने के प्रतिफल की भी प्राप्ति हो, साथ ही वार्षिक माध्यमिक बोर्ड की परीक्षा के लिए उनकी अच्छी तैयारी हो सके और वे परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करते हुए सफलता प्राप्त कर सकें।

अंत में मैं इन पुस्तकों के लेखकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ।

के० रवि कुमार भा.प्र.से.
सचिव
स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड

Jharkhandlab.com

भूमिका

प्रिय शिक्षक एवं विद्यार्थी,

जोहार !

हमें कक्षा 10 के विभिन्न विषयों के प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक से आपका परिचय कराने में प्रसन्नता हो रही है। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों के विषयवार एवं अध्यायवार अधिगम बिन्दुओं को समायोजित करते हुए झारखण्ड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक माध्यमिक परीक्षा में पूछे जानेवाले प्रश्नों के विविध प्रकारों के अंतर्गत पर्याप्त मात्रा में प्रश्नों का समावेश किया गया है। इस विषय आधारित प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के निर्माण का उद्देश्य शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को और अधिक रुचिकर, सरल एवं प्रभावशाली बनाना तथा विद्यार्थियों को बोर्ड परीक्षा की तैयारियों में सहयोग प्रदान करना है, जिससे सकारात्मक रूप से छात्रों को सीखने के प्रतिफल प्राप्त हों और बोर्ड परीक्षा में वे बेहतर प्रदर्शन कर सकें। राज्य के विभिन्न जिलों से चयनित अनुभवी शिक्षकों के द्वारा इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक का निर्माण किया गया है।

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ यह है कि इनमें प्रश्नों के उत्तर को सरल भाषा में प्रस्तुत करते हुए वैचारिक समझ (Conceptual Understanding) विकसित करने पर जोर दिया गया है। साथ ही इन पुस्तकों में झारखण्ड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक माध्यमिक बोर्ड परीक्षा – 2023 के प्रश्नोत्तर को भी समाहित किया गया है। इन पुस्तकों के माध्यम से न केवल विद्यार्थियों की प्रतिभा में निखार आएगा बल्कि वर्तमान समय के प्रतियोगिताओं के इस दौर में वे अनुकूल एवं अपेक्षित सफलता प्राप्त करने में भी सक्षम हो सकेंगे। आशा है कि यह प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक आपको पसंद आएगी एवं आपके लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं के साथ।

किरण कुमारी पासी भा.प्र.से.
निदेशक
झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
राँची, झारखण्ड

jharkhandlab.com

पाठकों से अनुरोध

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के निर्माण में काफी सावधानियाँ बरती गई है। इसके बावजूद यदि किसी प्रकार की अशुद्धियाँ मिले या कोई सुझाव हो तो इस email ID :- jcertquestionbank@gmail.com पर सूचित करें, ताकि अगले मुद्रण में इसे शुद्ध रूप से प्रस्तुत किया जा सके।

Jharkhandlab.com

प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक निर्माण समिति

मुख्य संरक्षक

श्री के० रवि कुमार (भा.प्र.से.)
सचिव
स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड

संरक्षक

श्रीमती किरण कुमारी पासी (भा.प्र.से.)
निदेशक
झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

अवधारणा एवं मार्गदर्शन

श्री मुकुंद दास उपनिदेशक (प्र.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची	**श्री बाँके बिहारी सिंह** सहायक निदेशक (अ.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची	**श्री मसुदी टुडू** सहायक निदेशक (अ.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

समन्वय एवं निर्देशन

डॉ0 नीलम रानी
संकाय सदस्य, जे.सी.ई.आर.टी., राँची
(टी.जी.टी., सामाजिक विज्ञान, राजकीयकृत उत्क्रमित उच्च विद्यालय पैतानो, जलडेगा, सिमडेगा)

सहयोग

श्री मणिलाल साव
संकाय सदस्य, जे.सी.ई.आर.टी., राँची
(पी.जी.टी. जीव विज्ञान, के. एन. +2 उच्च विद्यालय हरनाद, कसमार, बोकारो)

Jharkhandlab.com

प्रश्न बैंक निर्माण कार्य समिति

युगेश ओझा
(टी. जी. टी. संस्कृत)
राजकीयकृत उत्क्रमित उच्च विद्यालय, उरूगुटू, कांके, राँची।

डॉ. सरिता सिन्हा
(पी. जी. टी. संस्कृत)
एस. एस. +2 उच्च विद्यालय, पतरातू, रामगढ़।

डॉ. आशा रानी
(पी. जी. टी. संस्कृत)
+2 उच्च विद्यालय, चन्दनकियारी, बोकारो।

चन्द्रशेखर पांडे
TGT (संस्कृत)
राजकीय उच्च विद्यालय, बी. आई. टी. मेसरा, राँची।

Jharkhandlab.com

Jharkhandlab.com

विषयानुक्रमणिका

क्रम.	पाठ का नाम	पृष्ठ संख्या
प्रथमः पाठः	शुचिपर्यावरणम्	1—2
द्वितीयः पाठः	बुद्धिर्बलवती सदा	3—4
तृतीयः पाठः	व्यायामः सर्वदा पथ्यः	5—6
चतुर्थः पाठः	शिशुलालनम्	7—8
पंचमः पाठः	जननी तुल्यवत्सला	9—10
षष्ठः पाठः	सुभाषितानि	11—12
सप्तमः पाठः	सौहार्दं प्रकृतेः शोभा	13—14
अष्टमः पाठः	विचित्रः साक्षी	15—16
नवमः पाठः	सूक्तयः	17—18
दशमः पाठः	भूकम्पविभीषिका	19—21
एकादशः पाठः	प्राणेभ्योऽपि प्रियः सुहृद्	22—23
द्वादशः पाठः	अन्योक्तयः	24—26
	JAC वार्षिक माध्यमिक परीक्षा, 2023 - प्रश्नोत्तर	27—32

Jharkhandlab.com

Jharkhandlab.com

प्रथमः पाठः शुचि-पर्यावरणम्

(प्रश्न-कोषः)

1. एकपदेन उत्तरं लिखत -

(क) अत्र जीवितं कीदृशं जातम् ?
(ख) अनिशं महानगरमध्ये किं प्रचलति ?
(ग) कुत्सितवस्तुमिश्रितं किमस्ति?
(घ) अहं कस्मै जीवनं कामये?
(ङ) केषां माला रमणीया ?
(च) कालायसचक्रम् कीदृशं चलति?
(छ) अस्माकम् शरणं किम्?
(ज) "शुचि - पर्यावरणम् " अत्र विशेषण-पदं किम्?
(झ) का ध्वानं वितरन्ती संधावति?
(ञ) भृशं दूषितं किं वर्तते?

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि पूर्णवाक्येन लिखत-

(क) कविः किमर्थं प्रकृतेः शरणम् इच्छति
(ख) कस्मात् कारणात् महानगरेषु संसरणं कठिनं वर्तते?
(ग) अस्माकं पर्यावरणे किं किं दूषितम् अस्ति ?
(घ) कविः कुत्र सञ्चरणं कर्तुम् इच्छति?
(ङ) स्वस्थजीवनाय कीदृशे वातावरणे भ्रमणीयम्
(च) किं कज्जलमलिनं धूमं मुञ्चति?
(छ) धरातलं कीदृशं वर्तते?
(ज) कुत्र क्षणमपि मे सञ्चरणं स्यात्?
(झ) 'भृशं दूषितं' अत्र विशेषण-पदं किम्?
(ञ) 'जलम्' इत्यस्य पर्याय - पदं किम्?

3. सन्धिं / सन्धिविच्छेदं वा कुरुत-

(क) प्रकृतिः + ------- = प्रकृतिरेव।
(ख) स्यात्+ ------ + - - - - = स्यान्नैव ।
(ग) - - - - - + अनन्ताः = ह्यनन्ताः।
(घ) बहिः + अन्तः + जगति =
(ङ) - - - - - - + नगरात् = अस्मान्नगरात्।
(च) सम् + चरणम् = - - - - - - ।
(छ) धूमम् + मुञ्चति = ----------।
(ज) ग्राम +अन्ते = - - - - - -
(झ) दुर्दान्तैः+दशनैः= - - - - - -
(ञ) दुर्वहम्+अत्र = - - - - - - -
(ट) चलत्+अनिशम् = - - - - - -
(ठ) स्यात्+मे = -----------

4. अधोलिखितानाम् अव्ययानां सहायतया रिक्तस्थानानि पूरयत-

(भृशम्, यत्र, तत्र, अत्र, अपि, एव, सदा, बहिः)

(क) इदानीं वायुमण्डलं ________ प्रदूषितमस्ति
(ख) _____________जीवनं दुर्वहम् अस्ति ।
(ग) प्राकृतिक - वातावरणे क्षणं सञ्चरणम् ___________ लाभदायकं भवति ।
(घ) पर्यावरणस्य संरक्षणम्______________ प्रकृतेः आराधना।
(ङ) ________________ समयस्य सदुपयोगः करणीयः ।
(च) भूकम्पित-समये______________ गमनमेव उचितं भवति ।
(छ) _____________ हरीतिमा ____________ शुचि - पर्यावरणम् ।

5. (अ) अधोलिखितानां पदानां पर्यायपदं लिखत-

(क) सलिलम् ________________
(ख) आम्रम् ________________
(ग) वनम् ________________
(घ) शरीरम् ________________
(ङ) कुटिलम् ________________
(च) पाषाणः ________________

(आ) अधोलिखितपदानां विलोमपदानि पाठात् चित्वा लिखत-

(क) सुकरम् ________________
(ख) दूषितम् ________________
(ग) गृहणन्ती ________________
(घ) निर्मलम् ________________
(ङ) दानवाय ________________
(च) सान्ताः ________________

6. <u>रेखाङ्कित</u> पदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) शकटीयानम् <u>कज्जलमलिनं</u> धूमं मुञ्चति।
(ख) उद्याने <u>पक्षिणां</u> कलरव चेतः प्रसादयति ।
(ग) पाषाणीसभ्यतायां <u>लतातरुगुल्माः</u> प्रस्तरतले पिष्टाः सन्ति।
(घ) <u>महानगरेषु</u> वाहनानाम् अनन्ताः पङ्क्तयः धावन्ति ।
(ङ) <u>प्रकृत्याः</u> सन्निधौ वास्तविकं सुखं विद्यते ।
(च) मानवजीवनाय <u>शुचि</u>- पर्यावरणम् आवश्यकं भवति ।
(छ) <u>महानगरमध्ये</u> कालायसचक्रम् अनिशं चलति ।
(ज) <u>चक्रं</u> सदा वक्रं भ्रमति ।
(झ) <u>शतं</u> शकटीयानम् धूमं मुञ्चति ।
(ञ) उद्याने <u>पक्षिणां</u> कलरवं चेतः प्रसादयति ।

7. विकल्पेभ्यः उचितं समस्तपदानि चित्वा लिखत

(i) मलेन सहितम्

(क) मलसहितम् (ख) मलातसहितम्
(ग) समलम् (घ) मलायसहितम्

(ii) हरिताः च ये तरवः (तेषां)

(क) हरिततरूणाम् (ख) हरिततरूः
(ग) हरितरूः (घ) हरिताःतरवः

(iii) ललिताः च याः लताः (तासाम्)

(क) ललितलताः (ख) ललितलतानाम्
(ग) ललितलते (घ) ललितलतायै

(iv) नवा मालिका

(क) नवामालिका (ख) नवामालिकः
(ग) नवमालिका (घ) नवमालिकायै

Jharkhandlab.com

(v) **धृतः सुखसन्देशः येन (तम्)**

(क) धृतसुखसंदेशम् (ख) धृतसंदेशम्
(ग) धृतसुखम् (घ) धृतसंदेश

(vi) **कज्जलम् इव मलिनम्**

(क) कज्जलमलं (ख) कज्जलं
(ग) कज्जलमलिनम् (घ) कजझमलिनम्

(vii) **दुर्दान्तैः दशनैः**

(क) दुर्दान्तदशने (ख) दुर्दान्तदशनम्
(ग) दुर्दशनो (घ) दुर्दान्तदशनैः

(viii) **वाष्पयानानां पंक्तिः**

(क) वाष्पयानपंक्तिः (ख) वाष्पयानेपंक्तिः
(ग) वाष्पयानम् (घ) वाष्पयानायपंक्तिः

(ix) **जनानां ग्रसनम्**

(क) जनानाग्रसनम् (ख) जग्रसनम्
(ग) रजनाग्रसनम् (घ) जनग्रसनम्

(x) **लताः च तरवः च गुल्माः च**

(क) लताद्रगुल्मा (ख) लतातरुगुल्माः
(ग) लतागुल्मे (घ) लतातरवः

उत्तराणि (प्रश्न-कोषाणाम्)

1. **एकपदेन उत्तरत -**

(क) दुर्वहम्
(ख) कालायसचक्रम्
(ग) भक्ष्यम्
(घ) मानवाय
(ङ) ललितानाम् /हरिततरूणाम्
(च) अनिशम्
(छ) प्रकृतिः
(ज) शुचिः
(झ) वाष्पयानमाला
(ञ) वायुमण्डलम्

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत -**

(क) कविः सुजीवनार्थं प्रकृतेः शरणम् इच्छति
(ख) यानानां हि अनन्ताः पङ्क्तयः महानगरेषु सन्ति, अतः तत्र संसरणं कठिनं वर्तते।
(ग) अस्माकं पर्यावरणे वायुमण्डलं, जलम्, भक्ष्यम्, धरातलं च सर्वं दूषितम् अस्ति।
(घ) कविः एकान्ते कान्तारे सञ्चरणं कर्तुम् इच्छति।
(ङ) 'स्वस्थजीवनाय' खगकुलकलरवगुञ्जिते कुसुमावलिसमीरचालिते वातावरणे च भ्रमणीयम्।
(च) शतशकटीयानम् कज्जलमलिनं धूमं मुञ्चति।
(छ) धरातलं समलं वर्तते।
(ज) एकान्ते कान्तारे क्षणमपि सञ्चरणं स्यात्।
(झ) 'भृशम्' विशेषण पदम् अस्ति।
(ञ) 'पयः' इति जलस्य पर्याय- पदम् अस्ति।

3. **उत्तराणि**

(क) प्रकृतिः + एव = प्रकृतिरेव।
(ख) स्यात् + न + एव = स्यान्नैव।
(ग) हि + अनन्ताः= ह्यनन्ताः।
(घ) बहिः + अन्तः + जगति = बहिरन्तर्जगति।
(ङ) अस्मात् + नगरात् = अस्मान्नगरात्।
(च) सम् + चरणम् = सञ्चरणम्।
(छ) धूमम् +मुञ्चति = धूमं मुञ्चति।
(ज) ग्राम+अन्ते = ग्रामान्ते
(झ) दुर्दान्तैः + दशनैः =दुर्दान्तदशनैः
(ञ) दुर्वहम् + अत्र = दुर्वहमत्र
(ट) चलत् + अनिशम् =चलदनिशम्
(ठ) स्यात् + मे = स्यान्मे

4. **उत्तराणि-**

(क) भृशम् (ख) अत्र
(ग) अपि (घ) एव
(ङ) सदा (च) बहिः
(छ) यत्र, तत्र

5. (अ) **उत्तराणि -**

(क) जलम् (ख) रसालम्
(ग) कान्तारम् (घ) तनुः
(ङ) वक्रम् (च) प्रस्तरम्

(आ) **उत्तराणि -**

(क) दुर्वहम् (ख) शुचि
(ग) वितरन्ती (घ) समलम्
(ङ) मानवाय (च) अनन्ताः

6. **उत्तराणि-**

(क) कीदृशम्? (ख) केषाम्?
(ग) के? (घ) कुत्र?
(ङ) कस्याः? (च) कीदृशम्?
(छ) कुत्र? (ज) किम्?
(झ) कति? (ञ) केषाम्

7. **उत्तराणि**

(i) (ग) समलम् (ii) (क) हरिततरूणाम्
(iii) (ख) ललितलतानाम् (iv) (ग) नवमालिका
(v) (क) धृतसुखसंदेशम् (vi) (ग) कज्जलमलिनम्
(vii) (घ) दुर्दान्तदशनैः (viii) (क) वाष्पयानपंक्तिः
(ix) (घ) जनग्रसनम् (x) (ख) लतातरुगुल्माः

Jharkhandlab.com

द्वितीयः पाठः बुद्धिर्बलवती सदा

Jharkhandlab.com

(प्रश्न-कोषः)

1. **एकपदेन उत्तरं लिखत-**

(क) बुद्धिमती कुत्र व्याघ्रं ददर्श?
(ख) भामिनी कया विमुक्ता ?
(ग) सर्वदा सर्वकार्येषु का बलवती ?
(घ) व्याघ्रः कस्मात् विभेति?
(ङ) प्रत्युत्पन्नमतिः बुद्धिमती किम् आक्षिपन्ती?
(च) राजसिंहः कुत्र वसति स्म?
(छ) राजसिंहः कः आसीत्?
(ज) बुद्धिमती पुत्रद्वयोपेता कुत्र चलिता?
(झ) कीदृशः व्याघ्रः नष्टः?
(ञ) श्रृगालः कीदृशः आसीत्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत -**

(क) बुद्धिमती केन उपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता?
(ख) व्याघ्रः किं विचार्य पलायितः ?
(ग) लोके महतो भयात् कः मुच्यते ?
(घ) जम्बुकः किं वदन् व्याघ्रस्य उपहासं करोति?
(ङ) बुद्धिमती श्रृगालं किम् उक्तवती ?
(च) सा बुद्धिमती पुत्रौ चपेटया प्रहृत्य किम् जगाद?
(छ) कं दृष्ट्वा श्रृगालः अवदत्?
(ज) 'जम्बुकः' इति पदस्य पर्याय - पदं किम्?
(झ) "धूर्तः श्रृगालः हसन् आह" अत्र विशेष्य-पदं किम्?
(ञ) "सा एकं व्याध्रं ददर्श" अत्र क्रिया - पदं किम्?

3. **रेखांकितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-**

(क) तत्र <u>राजसिंहो</u> नाम राजपुत्रः वसति स्म।
(ख) बुद्धिमती <u>चपेटया</u> पुत्रौ प्रहृतवती ।
(ग) <u>व्याघ्रं</u> दृष्ट्वा धूर्तः श्रृगालः अवदत् ।
(घ) त्वं <u>मानुषात्</u> विभेषि ।
(ङ) पुरा त्वया <u>मह्यं</u> व्याघ्रत्रयं दत्तम्।
(च) बुद्धिमती <u>पितुर्गृहं</u> प्रति चलिता।
(छ) सा <u>धाष्टर्यात्</u> पुत्रौ चपेटया जगाद ।
(ज) <u>मार्गे</u> सा एकं व्याघ्रं ददर्श
(झ) <u>सा</u> व्याघ्रमागच्छन्तं दृष्ट्वा उवाच ।
(ञ) कश्चित् धूर्तः <u>श्रृगालः</u> हसन् आह

4. **अधोलिखितानि वाक्यानि घटनाक्रमानुसारेण योजयत-**

(क) व्याघ्रः व्याघ्रमारी इयमिति मत्वा पलायितः ।
(ख) प्रत्युत्पन्नमतिः सा श्रृगालं आक्षिपन्ती उवाच।
(ग) जम्बुककृतोत्साहःव्याघ्रःपुनः काननम् आगच्छत्।
(घ) मार्गे सा एकं व्याघ्रम् अपश्यत् ।
(ङ) व्याघ्रं दृष्ट्वा सा पुत्रौ ताडयन्ती उवाच अधुना एकमेव व्याघ्रं विभज्य भुज्यताम् ।
(च) बुद्धिमती पुत्रद्वयेन उपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता ।
(छ) 'त्वं व्याघ्रत्रयम् आनेतुं' प्रतिज्ञाय एकमेव आनीतवान् ।
(ज) गलबद्ध-श्रृगालकः व्याघ्रः पुनः पलायितः ।

5. **सन्धि / सन्धिविच्छेदं वा कुरुत-**

(क) पितुर्गृहम् (ख) एकैकः
(ग) अन्यः+अपि (घ) इति + उक्त्वा
(ङ) यत्र + आस्ते (च) व्याघ्रोऽपि
(छ) बुद्धिर्बलवती (ज) प्रत्युत्पन्नमतिः
(झ) पुनः+अपि (ञ) कश्चित्

6. **पाठात् नीत्वा पर्यायपदं लिखत-**

(क) वनम् (ख) श्रृगालः
(ग) शीघ्रम् (घ) पत्नी
(ङ) गच्छसि (च) दृष्ट्वा
(छ) कलहम् (ज) तूर्णम्
(झ) उवाच (ञ) नष्टः

7. **विकल्पेभ्यः उचितं विपरीतार्थकं पदं चित्वा लिखत-**

(i) **प्रथमः**
(क) तृतीयः (ख) अन्तः
(ग) द्वितीयः (घ) पंचमः

(ii) **उक्त्वा**
(क) श्रुत्वा (ख) धावित्वा
(ग) रोदित्वा (घ) गत्वा

(iii) **अधुना**
(क) इदानीम् (ख) पुरा
(ग) अथ (घ) झटिति

(iv) **अवेला**
(क) कथञ्चन (ख) वेला
(ग) सर्वदा (घ) आगत्य

(v) **बुद्धिहीना**
(क) मंदबुद्धि (ख) मूर्खबुद्धिः
(ग) शांतबुद्धिः (घ) बुद्धिमती

(vi) **परोक्षम्**
(क) सम्मुखम् (ख) अधुना
(ग) अनन्तः (घ) प्राचीनकाले

(vii) **पुरा**
(क) अधुना (ख) पश्चात्
(ग) पूर्वम् (घ) परश्वः

(viii) **गच्छति**
(क) आदि (ख) आगच्छति
(ग) धावति (घ) पृच्छति

(ix) **पश्चात्**
(क) पूर्वम् (ख) परह्यः
(ग) प्रदाय (घ) सम्मुखम्

(x) **सत्वरम्**

(क) शीघ्रम् (ख) अधुना
(ग) चिरम् (घ) प्रत्यक्षम्

उत्तराणि (प्रश्न-कोषाणाम्)

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) गहनकानने (ख) निजबुद्ध्या
(ग) बुद्धिः (घ) मानुषात्
(ङ) जम्बुकम् (च) देउलाख्यो-ग्रामे
(छ) राजपुत्रः (ज) पितुर्गृहम्
(झ) भयाकुलचित्तः (ञ) धूर्तः

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत -**

(क) बुद्धिमती पुत्रद्वयोपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता।
(ख) काचित् इयम् व्याघ्रमारी इति विचार्य व्याघ्रः पलायितः।
(ग) लोके महतो भयात् बुद्धिमान् मुच्यते
(घ) "मानुषादपि विभेषि" इति वदन् जम्बुकः व्याघ्रस्य उपहासं करोति।
(ङ) बुद्धिमती श्रृगालम् उक्तवती -रे रे धूर्त! त्वया माम् पुरा व्याघ्रत्रयं दत्तम्।
विश्वास्य अपि अद्य एकम् आनीय कथं यासि इति अधुना वद।
(च) कथमेकैकशो व्याघ्रभक्षणाय कलहं कुरुथः।
(छ) व्याघ्रं दृष्ट्वा श्रृगालः अवदत्।
(ज) 'श्रृगालः' इति जम्बुकस्य पर्यायपदम्।
(झ) 'श्रृगालः' अत्र विशेष्यपदम्।
(ञ) "ददर्श" अत्र क्रियापदं वर्तते।

3. **प्रश्न- निर्माणम्-**

(क) किम्? (ख) कया?
(ग) कम्? (घ) कस्मात्?
(ङ) कस्मै? (च) किम्?
(छ) कथम्? (ज) कुत्र?
(झ) का? (ञ) कः?

4. **घटनाक्रमानुसारेण योजयत-**

(क) बुद्धिमती पुत्रद्वयेन उपेता पितुर्गृहं गृहं प्रति चलिता।
(ख) मार्गे सा एकं व्याघ्रम् अपश्यत्।
(ग) व्याघ्रं दृष्ट्वा सा पुत्रौ ताडयन्ती उवाच अधुना एकमेव व्याघ्रं विभज्य भुज्यताम्।।
(घ) व्याघ्रः व्याघ्रमारी इयमिति मत्वा पलायितः।
(ङ) जम्बुककृतोत्साहः व्याघ्रः पुनः काननम् आगच्छत्।
(च) प्रत्युत्पन्नमतिः सा श्रृगालम् आक्षिपन्ती उवाच।
(छ) त्वं व्याघ्रत्रयं आनेतुं प्रतिज्ञाय एकमेव आनीतवान्।
(ज) गलबद्धश्रृगालकः व्याघ्रः पुनः पलायितः

5. **संधिः**

(क) पितुः +गृहम् (ख) एक+एकः
(ग) अन्योऽपि (घ) इत्युक्त्वा
(ङ) यत्रास्ते (च) व्याघ्रः +अपि
(छ) बुद्धिः+बलवती (ज) प्रति + उत्पन्नमतिः
(झ) पुनरपि (ञ) कः+चित्

6. **पर्यायपदम्-**

(क) काननम् (ख) जम्बुकः
(ग) सत्वरम् (घ) भार्या
(ङ) यासि (च) अवलोक्य
(छ) विवादम् (ज) शीघ्रम्
(झ) अकथयत् (ञ) पलायितः

7. **विपरीतार्थकं पदम्-**

(i) (ग) द्वितीयः (ii) (क) श्रुत्वा
(iii) (ख) पुरा (iv) (ख) वेला
(v) (घ) बुद्धिमती (vi) (क) सम्मुखम्
(vii) (क) अधुना (viii) (ख) आगच्छति
(ix) (क) पूर्वम् (x) (क) शीघ्रम्

Jharkhandlab.com

तृतीय - पाठः   व्यायामः सर्वदा पथ्यः

Jharkhandlab.com

(प्रश्न-कोषः)

1. **एकपदेन उत्तरं लिखत-**

(क) परमम् आरोग्यं कस्मात् उपजायते ?
(ख) कस्य मांस स्थिरीभवति ?
(ग) सदा कः पथ्य : ?
(घ) कैः पुंभिः सर्वेषु ऋतुषु व्यायामः कर्तव्यः ?
(ङ) व्यायामस्विन्नगात्रस्य समीपं के न उपसर्पन्ति ?
(च) कस्य आयासजननं कर्म व्यायामः इति कथ्यते?
(छ) किं कृत्वा जनः सुखं प्राप्नोति?
(ज) उष्णशीतादीनाम् सहिष्णुता कथम् उपजायते?
(झ) "अंगानाम्" इत्यर्थे किं पदं पाठे प्रयुक्तम्?
(ञ) "दुःखम्" अस्य विलोम-पदं पाठे किम् आगतम्?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत-**

(क) कीदृशं कर्म व्यायामसंज्ञितम् कथ्यते ?
(ख) व्यायामात् किं किमुपजायते?
(ग) जरा कस्य सकाशं सहसा न समधिरोहति ?
(घ) कस्य विरुद्धमपि भोजनं परिपच्यते?
(ङ) कियता बलेन व्यायामः कर्तव्यः ?
(च) अर्धबलस्य लक्षणम् किम्?

3. **रेखांकितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -**

(क) शरीरस्य आयासजननं कर्म व्यायामः इति कथ्यते।
(ख) अरयः व्यायामिनं न अर्दयन्ति।
(ग) आत्महितैषिभिः सर्वदा व्यायामः कर्तव्यः।
(घ) व्यायामं कुर्वतः विरुद्धं भोजनम् अपि परिपच्यते।
(ङ) गात्राणां सुविभक्तता व्यायामेन संभवति।

4. **वाच्य-परिवर्तनं क्रियताम्-**

(क) देवाः आशीर्वादान् यच्छन्ति।
(ख) त्वम् गीतं गायसि।
(ग) सः माम् पश्यति।
(घ) त्वं पुष्पाणि चिनोषि
(ङ) सः पाठं पठति।

5. **अधोलिखितेषु वाक्येषु अङ्कानां स्थाने समय-सूचक-पदानि लिखत-**

(क) श्रेया रविवासरे (9:00) --------------- वादने उत्तिष्ठति।
(ख) (10:45) --------------- वादने प्रातराशं करोति।
(ग) (11:30) --------------- वादने दूरदर्शने नाटकं पश्यति
(घ) (12:15) --------------- वादने गृहकार्यं करोति।
(ङ) मम भ्राता प्रातः (5:00) --------------- भ्रमणार्थं गच्छति।

6. **निम्नलिखितानाम् अव्ययानाम् रिक्तस्थानेषु प्रयोगं कुरुत-**

(सहसा, अपि, सदृशं, सर्वदा, यदा, सदा, अन्यथा)

(क) ----------व्यायामः कर्तव्यः।
(ख) ------- मनुष्यः सम्यकरूपेण व्यायामं करोति तदा सः----------स्वस्थः तिष्ठति।
(ग) व्यायामेन असुन्दराः --------------- सुन्दराः भवन्ति।
(घ) व्यायामिनः जनस्य सकाशं वार्धक्यं --------------- न आयाति।
(ङ) व्यायामेन --------------- किञ्चित् स्थौल्यापकर्षणं नास्ति।
(च) व्यायामं समीक्ष्य एव कर्तव्यम् --------------- व्याधयः आयान्ति।

7. **विकल्पेभ्यः चित्वा प्रकृतिं प्रत्ययं च पृथक् कृत्वा लिखत**

(i) **पथ्यतमः**
(क) पथ + अण् (ख) पथ्य + तमप्
(ग) पथ + मतुप् (घ) पथ + तल्

(ii) **सहिष्णुता**
(क) सह + ष्णुता (ख) सहिष् + णुता
(ग) सहिष्णु +तल् (घ) सहिष्णु + ठक्

(iii) **अग्नित्वम्**
(क) अग्नि +तल् (ख) अग्नि+त्व
(ग) अग्नि +ठक् (घ) अग्नि +टाप्

(iv) **स्थिरत्वम्**
(क) स्थिर + त्व (ख) स्थिरत + मतुप्
(ग) स्थिर + त्वम् (घ) स्थि + रत्वम्

(v) **देवत्वम्**
(क) देव + त्व (ख) देव + क्त्वा
(ग) देव + तुमुन् (घ) देव + अण्

(vi) **मित्रता**
(क) मित्र + ता (ख) मित्र + तमप्
(ग) मित्र + ल्यप् (घ) मित्र + तल्

(vii) **लघुत्वम्**
(क) लघु + त्व (ख) लघु + शतृ
(ग) लघु + तरप् (घ) लघु + क्त्वा

(viii) **जनता**
(क) जन + तल् (ख) जन + अण्
(ग) जन + त्व (घ) जन + मतुप्

(ix) **नृपत्वम्**
(क) नृप + क्त्वा (ख) नृप + त्व
(ग) नृप + ठञ् (घ) नृप + त्वम्

(x) **शीतलता**
(क) शीतल + शतृ (ख) शीतल + तमप्
(ग) शीतल + तरप् (घ) शीतल + तल्

उत्तराणि (प्रश्न-कोषाणाम्)

1. **एकपदेन उत्तरं लिखत -**

(क) व्यायामात् (ख) व्यायामाभिरतस्य
(ग) व्यायामः (घ) आत्महितैषिभिः

(ङ) व्याधयः (च) शरीरस्य
(छ) व्यायामम् (ज) व्यायामात्
(झ) गात्राणाम् (ञ) सुखम्

2. पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत -

(क) शरीरायासजननं कर्म व्यायामसंज्ञितम् कथ्यते।
(ख) व्यायामात् श्रमक्लमपिपासा- ऊष्म-शीतादीनां सहिष्णुता परमं च आरोग्यम् उपजायते।
(ग) जरा व्यायामिनः जनस्य सकाशं सहसा न समधिरोहति ।
(घ) व्यायामं कुर्वतः विरुद्धमपि भोजनं परिपच्यते।
(ङ) अर्धेन बलेन व्यायामः कर्तव्यः ।
(च) व्यायामं कुर्वतः जन्तोः यदा हृदिस्थानास्थितः वायुः वक्त्रं प्रपद्यते तद् अर्धबलस्य लक्षणम् अस्ति।

3. रेखांकितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -

(क) कस्य ? (ख) के ?
(ग) कैः ? (घ) कीदृशं ?
(ङ) केषाम् ?

4. वाच्य-परिवर्तनम्-

(क) देवैः आशीर्वादाः दीयन्ते।
(ख) त्वया गीतं गीयते।
(ग) तेन अहं दृश्ये।
(घ) त्वया पुष्पाणि चीयन्ते।
(ङ) तेन पाठः पठ्यते।

5. समय-सूचक -पदानि

(क) नव (ख) पादोन-एकादश
(ग) सार्ध-एकादश (घ) सपाद-द्वादश
(ङ) पञ्च - वादने

6. अव्ययानां रिक्त-स्थानेषु प्रयोगम्-

(क) सर्वदा (ख) यदा, सदा
(ग) अपि (घ) सहसा
(ङ) सदृशम् (च) अन्यथा

7. प्रकृति - प्रत्ययः -

((i) (ख) पथ्य + तमप् (ii) (ग) सहिष्णु + तल्
(iii) (ख) अग्नि + त्व (iv) (क) स्थिर + त्व
((v) (क) देव + त्व (vi) (घ) मित्र + तल्
(vii) (क) लघु + त्व (viii) (क) जन + तल्
(ix) (ख) नृप + त्व (x) घ) शीतल + तल्

Jharkhandlab.com

चतुर्थः पाठः शिशुलालनम्

Jharkhandlab.com

(प्रश्न-कोषः)

1. एकपदेन उत्तरं लिखत-

(क) कुशलवौ कम् उपसृत्य प्रणमतः ?
(ख) तपोवनवासिनः कुशस्य मातरं केन नाम्ना आह्वयन्ति ?
(ग) वयोऽनुरोधात् कः लालनीयः भवति ?
(घ) केन सम्बन्धेन वाल्मीकिः लवकुशयोः गुरु : ?
(ङ) कुत्र लवकुशयोः पितुः नाम न व्यवह्रियते ?
(च) सिंहासने कः स्थितः ?
(छ) कयोः स्पर्शः रामाय हृदयग्राही आसीत् ?
(ज) कुशलवौ कस्य समीपम् अगच्छताम् ?
(झ) कौ यमलौ आस्ताम् ?
(ञ) कुशलवयोः गुरुः कः आसीत् ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत-

(क) रामाय कुशलवयोः कण्ठाश्लेषस्य स्पर्शः कीदृशः आसीत्?
(ख) रामः लवकुशौ कुत्र उपवेशयितुम् कथयति?
(ग) बालभावात् हिमकरः कुत्र विराजते ?
(घ) कुशलवयोः वंशस्य कर्त्ता कः ?
(ङ) कुशलवयोः मातरं वाल्मीकिः केन नाम्ना आह्वयति ?
(च) रामः कौ अंकम् उपवेशयति?
(छ) लवकुशयोः कीदृशः शरीरसन्निवेशः?

3. यथानिर्देशम् उत्तरत-

(क) जानाम्यहं तस्य नामधेयम्' अस्मिन् वाक्ये कर्तृपदं किम् ?
(ख) "किं कुपिता एवं भणति उत प्रकृतिस्था"- अस्मात् वाक्यात् हर्षिता' इति पदस्य विपरीतार्थक-पदम् चित्वा लिखत।
(ग) "विदूषकः (उपसृत्य) आज्ञापयतु भवान् !' अत्र भवान् इति पदं कस्मै प्रयुक्तम् ?
(घ) "तस्मादङ्क-व्यवहितम् अध्यास्याताम् सिंहासनम्" - अत्र क्रियापदं किम् ?
(ङ) 'वयसस्तु न किञ्चिदन्तरम्'- अत्र' आयुषः इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम् ?

4. मञ्जूषातः पर्यायद्वयं चित्वा पदानां समक्षं लिखत-

(भानुः, शिवः, शिष्टाचारः, शशिः, चन्द्रशेखरः, सुतः, इदानीम्, अधुना, पुत्रः, सूर्यः, सदाचारः, निशाकरः)

(क) हिमकरः -------------- --------------
(ख) सम्प्रति -------------- --------------
(ग) समुदाचारः -------------- --------------
(घ) पशुपतिः -------------- --------------
(ङ) तनयः -------------- --------------
(च) सहस्रदीधितिः -------------- --------------

5. विशेषण-विशेष्यपदानि योजयत -

विशेषण-पदानि	विशेष्य पदानि
(**यथा** - श्लाघ्या कथा)	
(i) उदात्तरम्यः	(क) समुदाचारः
(ii) अतिदीर्घः	(ख) स्पर्शः
(iii) समरूपः	(ग) कुशलवयोः
(iv) हृदयग्राही	(घ) प्रवासः
(v) कुमारयोः	(ङ) कुटुम्बवृत्तान्तः

6. अधोलिखितपदेषु सन्धिं अथवा /विच्छेदं विकल्पेभ्यः चित्वा लिखन्तु

(i) द्वयोः + अपि
(क) द्वयोअपि (ख) द्वयोरपि
(ग) द्वयोरपि (घ) द्वयोआपि

(ii) द्वौ + अपि
(क) द्वावपि (ख) द्वौअपि
(ग) द्वाऽपि (घ) द्वेअपि

(iii) कः + अत्र
(क) काअत्र (ख) कोऽत्र
(ग) काऽत्र (घ) कःअत्र

(iv) अनभिज्ञः + अहम्
(क) अनभिज्ञोऽहम् (ख) अनभिज्ञाअहम्
(ग) अनभिज्ञहम (घ) अनभिःहम्

(v) इति + आत्मानम्
(क) इतिआत्मानम् (ख) इत्यात्मानम्
(ग) इतिमानम् (घ) इत्यमानमा

(vi) दारुणश्च
(क) दारुणः + च (ख) दारु + नश्च
(ग) दा + रुणश्च (घ) दारुणे + स्च

(vii) खल्वेतत्
(क) खली + एतत् (ख) खल्वे + एतत्
(ग) खलु + एतत् (घ) खल्वा + तद

(viii) ददाम्यहम्
(क) ददामि + अहम् (ख) ददामु + अहम्
(ग) ददाम्य + हम् (घ) ददामे + हम्

(ix) भवतोर्गुरुः
(क) भव + तोर्गुरुः (ख) भवतोः + गुरुः
(ग) भवतो + गुरू (घ) भौ + गुरुः

(x) धिङ् माम्
(क) धि + माम् (ख) धिष् + माम्
(ग) धिक् + माम् (घ) धौ + माम्

उत्तराणि (प्रश्न-कोषाणाम्)

1. एकपदेन उत्तरम्

(क) रामम् (ख) देवी
(ग) शिशुजनः (घ) उपनयनोपदेशेन

(ङ) तपोवने | (च) रामः
(छ) लवकुशयोः | (ज) रामस्य
(झ) लवकुशौ | (ञ) महर्षि-वाल्मीकिः

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत

(क) रामाय कुशलवयोः 'काण्ठाश्लेषस्य स्पर्शः' हृदयग्राही आसीत्।
(ख) रामः लवकुशौ सिंहासनम् उपवेशयितुं कथयति ।
(ग) बालभावात् हिमकरः पशुपति-मस्तके विराजते।
(घ) कुशलवयोः वंशस्य कर्ता सहस्रदीधितिः।
(ङ) कुशलवयोः मातरं वाल्मीकिः 'वधूः' इति नाम्ना आह्वयति ?
(च) रामः लवकुशौ अंकम् उपवेशयति।
(छ) लवकुशयोः समरूपः शरीरसन्निवेशः ।

3. यथानिर्देशम् उत्तरत

(क) अहम् | (ख) कुपिता
(ग) रामाय | (घ) अध्यास्यताम्
(ङ) वयसः

4. उत्तराणि (पर्यायपदानि)

(क)	हिमकरः	शशिः	निशाकरः
(ख)	सम्प्रति	इदानीम्	अधुना
(ग)	समुदाचारः	शिष्टाचारः	सदाचारः
(घ)	पशुपतिः	शिवः	चन्द्रशेखरः
(ङ)	तनयः	पुत्रः	सुतः
(च)	सहस्रदीधितिः	सूर्यः	भानुः

5. विशेषण-विशेष्यपदानि योजनम्

(क) उदात्तरम्यः - समुदाचारः
(ख) अतिदीर्घः - प्रवासः
(ग) समरूपः - कुटुम्बवृत्तान्तः
(घ) हृदयग्राही - स्पर्शः
(ङ) कुमारयोः - कुशलवयोः

6. संधिः अथवा विच्छेदः

(i) (ग) द्वयोरपि | (ii) (क) द्वावपि
(iii) (ख) कोऽत्र | (iv) (क) अनभिज्ञोऽहम्
(v) (ख) इत्यात्मानम् | (vi) (क) दारुणः + च
(vii) (ग) खलु + एतत् | (viii) (क) ददामि + अहम्
(ix) (ख) भवतोः + गुरुः | (x) (ग) धिक् + माम्

Jharkhandlab.com

पञ्चमः पाठः | जननीतुल्यवत्सला

(प्रश्न-कोषः)

1. एकपदेन उत्तरत-

(क) वृषभः 'दीनम्', इति जानन् अपि कः तं नुद्यमानः आसीत् ?
(ख) वृषभः कुत्र पपात् ?
(ग) दुर्बले सुते कस्याः अधिका कृपा भवति ?
(घ) कयोः एकः शरीरेण दुर्बलः आसीत् ?
(ङ) चण्डवातेन मेघरवैश्च सह कः समजायत ?
(च) जननीतुल्यवत्सला इति पाठः कस्मात् ग्रंथात् संकलितः?
(छ) क्षेत्रे कः पपात् ?
(ज) का कथयति - "भो वासव ! पुत्रस्य दैन्यं दृष्ट्वा अहं रोदिमि।"

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

(क) कृषकः किं करोति स्म ?
(ख) माता सुरभिः किमर्थम् अश्रूणि मुञ्चति स्म?
(ग) सुरभिः इन्द्रस्य प्रश्नस्य किमुत्तरं ददाति?
(घ) मातुः अधिका कृपा कस्मिन् भवति ?
(ङ) इन्द्रः दुर्बलवृषभस्य कष्टानि अपाकर्तुं किं कृतवान् ?
(च) जननी कीदृशी भवति ?
(छ) पाठेऽस्मिन् कयोः संवादः विद्यते ?

3. 'क' स्तम्भे दत्तानां पदानां मेलनं 'ख' स्तम्भे दत्तैः समानार्थकपदैः कुरुत -

'क' स्तम्भ		'ख' स्तम्भ	
(क)	कृच्छ्रेण	(i)	वृषभः
(ख)	चक्षुर्भ्याम्	(ii)	वासवः
(ग)	जवेन	(iii)	नेत्राभ्याम्
(घ)	इन्द्रः	(iv)	अचिरम्
(ङ)	पुत्राः	(v)	द्रुतगत्या
(च)	शीघ्रम्	(vi)	काठिन्येन
(छ)	बलीवर्दः	(vii)	सुताः

4. रेखांकितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -

(क) सः कृच्छ्रेण भारम् उद्वहति।
(ख) सुराधिपः ताम् अपृच्छत् ।
(ग) अयम् अन्येभ्यो दुर्बलः ।
(घ) धेनूनां माता सुरभिः आसीत्।
(ङ) सहस्राधिकेषु पुत्रेषु सत्स्वपि सा दुःखी आसीत्।
(च) वृषभः क्षेत्रे पपात्।

5. रेखाङ्कितपदे यथास्थानं सन्धिं विच्छेदं वा कुरुत -

(क) जनकः क्षेत्रकर्षणं कुर्वन् + आसीत् ।
(ख) तयोरेकः वृषभः दुर्बलः आसीत्।
(ग) तथापि वृषः नोत्थितः ।
(घ) सत्स्वपि बहुषु पुत्रेषु अस्मिन् वात्सल्यं कथम् ?
(ङ) तथा + अपि + अहम् + एतस्मिन् स्नेहम् अनुभवामि।
(च) मे बहूनि + अपत्यानि सन्ति।
(छ) सर्वत्र जलोपप्लवः संजातः ।

6. अधोलिखितेषु वाक्येषु रेखाङ्कितसर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम् -

(क) सा च अवदत् - भो वासव! अहं भृशं दुःखिता अस्मि।
(ख) पुत्रस्य दैन्यं दृष्ट्वा अहम् रोदिमि।
(ग) सः दीनः इति जानन् अपि कृषकः तं पीडयति।
(घ) मे बहूनि अपत्यानि सन्ति।
(ङ) सः च ताम् एवम् असान्त्वयत् ।
(च) सहस्रेषु पुत्रेषु सत्स्वपि तव अस्मिन् प्रीतिः अस्ति।

7. उदाहरणमनुसृत्य पाठात् चित्वा प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत-

यथा- सुरभिवचनं **श्रुत्वा** इन्द्रः विस्मितः। (**श्रु+क्त्वा**)
(क) बलीवर्दाभ्याम् क्षेत्रकर्षणं कुर्वन् आसीत्।
(ख) स्वपुत्रं दृष्ट्वा सर्वधेनूनां मातुः नेत्राभ्यां अश्रूणि आविरसान् ।
(ग) सः दीनः इति जानन् अपि कृषकः तं पीडयति।
(घ) धुरं वोढुम् सः न शक्नोति।
(ङ) विशिष्य आत्मवेदनानुभवामि ।
(च) वृषभो नीत्वा गृहमगात्।

8. 'क' स्तम्भे विशेषणपदं लिखितम्, 'ख' स्तम्भे पुनः विशेष्यपदम् । तयोः मेलनं कुरुत-

'क' स्तम्भः		'ख' स्तम्भः	
(क)	कश्चित्	(i)	वृषभम्
(ख)	दुर्बलम्	(ii)	कृपा
(ग)	क्रुद्धः	(iii)	कृषीवलः
(घ)	सहस्राधिकेषु	(iv)	खण्डलः
(ङ)	अभ्यधिका	(v)	जननी
(च)	विस्मितः	(vi)	पुत्रेषु
(छ)	तुल्यवत्सला	(vii)	कृषकः

9. विकल्पेभ्यः उचितम् उत्तरं चिनुत -

(क) दृष्ट्वा पदे कः प्रत्ययः ?

(i) तुमुन् (ii) क्त्वा
(iii) क्त (iv) तव्यत्

(ख) वह् + तुमुन्=?

(i) वोढुम् (ii) वहितुम्
(iii) वहतुम् (iv) वह्तुमुन्

(ग) 'अस्मिन्नेव' अस्य सन्धिविच्छेदं कुरुत -

(i) अस्मिन्न+ एव (ii) अस्मि+ न्नेव
(iii) अस्मिन्+एव (iv) अस्+ मिन्नेव

(घ) कस्याः नेत्राभ्याम् अश्रूणि आविरसान्?

(i) दीनवृषभस्य (ii) सुरभेः
(iii) इन्द्रस्य (iv) कृषकस्य

(ङ) क्षेत्रे कः पपात् ?

(i) सुरभिः (ii) कृषकः
(iii) दुर्बलः वृषभः (iv) इन्द्रः

Jharkhandlab.com

(च) **सुरभेः वचनं श्रुत्वा कस्य हृदयम् अद्रवत् ?**

(i) इन्द्रस्य (ii) कृषकस्य
(iii) सुरभेः (iv) दीनवृषभस्य

(छ) **तथा + अपि =?**

(i) तथापि (ii) तथाअपि
(iii) तथ्यापि (iv) तथ्वापि

(ज) **धेनूनाम् इति पदस्य पर्यायपदं चिनुत-**

(i) अजानाम् (ii) गजानाम्
(iii) शुकानाम् (iv) गवाम्

(झ) **वासवः कस्य समानार्थकपदम् अस्ति ?**

(i) दीनवृषभस्य (ii) सुरभेः
(iii) इन्द्रस्य (iv) कृषकस्य

(ञ) **महाभारतस्य रचनाकारः कः ?**

(i) वाल्मीकिः (ii) वेदव्यासः
(iii) कालिदासः (iv) बाणभट्टः

उत्तराणि (प्रश्न-कोषाणाम्)

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) कृषकः (ख) क्षेत्रे
(ग) मातुः (घ) बलीवर्दयोः
(ङ) प्रवर्षः (च) महाभारतात्
(छ) दुर्बलः वृषभः (ज) सुरभिः

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि पूर्णवाक्येन संस्कृतभाषया लिखत-**

(क) कृषकः बलीवर्दाभ्यां क्षेत्रकर्षणं करोति स्म।
(ख) भूमौ पतिते स्वपुत्रं दृष्ट्वा माता सुरभिः अश्रूणि मुञ्चति स्म।
(ग) सुरभिः उत्तरं ददाति यत् सा स्वपुत्रस्य दैन्यं दृष्ट्वा रोदिति ।
(घ) मातुः अधिका कृपा दुर्बले पुत्रे भवति ।
(ङ) इन्द्रः दुर्बलवृषभस्य कष्टानि अपाकर्तुं अतिवृष्टिः कृतवान् ।
(च) जननी तुल्यवत्सला भवति।
(छ) पाठेऽस्मिन् इन्द्रः सुरभेः च संवादः विद्यते।

3. **'क' स्तम्भे दत्तानां पदानां मेलनं 'ख' स्तम्भे दत्तैः समानार्थकपदैः कुरुत -**

'क' स्तम्भः		'ख' स्तम्भः
(क)	कृच्छ्रेण	काठिन्येन
(ख)	चक्षुभ्याम्	नेत्राभ्याम्
(ग)	जवेन	द्रुतगत्या
(घ)	इन्द्रः	वासवः
(ङ)	पुत्राः	सुताः
(च)	शीघ्रम्	अचिरम्
(छ)	बलीवर्दः	वृषभः

4. **रेखांकितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -**

(क) सः <u>केन</u> भारम् उद्वहति?
(ख) <u>कः</u> ताम् अपृच्छत् ?
(ग) अयम् <u>केभ्यो</u> दुर्बलः ?
(घ) <u>कासां</u> माता सुरभिः आसीत्?
(ङ) <u>कति</u> पुत्रेषु सत्स्वपि सा दुःखी आसीत्?
(च) <u>कः</u> क्षेत्रे पपात् ?

5. **रेखाङ्कितपदे यथास्थानं सन्धिं विच्छेदं वा कुरुत -**

(क) कुर्वन्नासीत्
(ख) तयोः + एकः
(ग) नोत्थितः
(घ) सत्सु + अपि
(ङ) तथाप्यहमेतस्मिन्
(च) बहून्यपत्यानि
(छ) जल + उपप्लवः

6. **अधोलिखितेषु वाक्येषु रेखाङ्कितसर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम् -**

(क) सूरभ्यै (ख) सूरभ्यै
(ग) दुर्बलवृषभाय (घ) सूरभ्यै
(ङ) इन्द्राय (च) सूरभ्यै

7. **उदाहरणमनुसृत्य पाठात् चित्वा प्रकृतिप्रत्ययविभागं कुरुत-**

यथा- सुरभिवचनं श्रुत्वा इन्द्रः विस्मितः। (श्रु+क्त्वा)
(क) (कृ + शतृ)
(ख) (दृश् + क्त्वा)
(ग) (ज्ञा + शतृ)
(घ) (वह् + तुमुन्)
(ङ) (वि + शिष् + ल्यप्)
(च) (नी + क्त्वा)

8. **'क' स्तम्भे विशेषणपदं लिखितम्, 'ख' स्तम्भे पुनः विशेष्यपदम् । तयोः मेलनं कुरुत-**

'क' स्तम्भः		'ख' स्तम्भः	
(क)	कश्चित्	(vii)	कृषकः
(ख)	दुर्बलम्	(i)	वृषभम्
(ग)	क्रुद्धः	(iii)	कृषीवलः
(घ)	सहस्राधिकेषु	(vi)	पुत्रेषु
(ङ)	अभ्यधिका	(ii)	कृपा
(च)	विस्मितः	(iv)	आखण्डलः
(छ)	तुल्यवत्सला	(v)	जननी

9. **विकल्पेभ्यः उचितम् उत्तरं चिनुत -**

(क) (ii) क्त्वा
(ख) (i) वोढुम्
(ग) (iii) अस्मिन्+एव
(घ) (ii) सुरभेः
(ङ) (iii) दुर्बलः वृषभः
(च) (i) इन्द्रस्य
(छ) (i) तथापि
(ज) (iv) गवाम्
(झ) ((iii) इन्द्रस्य
(ञ) (ii) वेदव्यासः

Jharkhandlab.com

पाठः 6 सुभाषितानि

Jharkhandlab.com

(प्रश्न-कोषः)

1. अधोलिखितानां श्लोकानाम् अन्वयं कुरुत -

क. आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति।।

ख. गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणो,
बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः।
पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः,
करी च सिंहस्य बलं न मूषकः।।

ग. सेवितव्यो महावृक्षः फलच्छाया समन्वितः।
यदि दैवात् फलं नास्ति छाया केन निवार्यते।।

घ. संपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।
उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमये तथा।।

ङ. क्रोधो हि शत्रुः प्रथमो नराणां,
देहस्थितो देहविनाशनाय।
यथास्थितः काष्ठगतो हि वह्निः
स एव वह्निर्दहते शरीरम्।।

2. एकपदेन उत्तरत-

(क) गुणी किं वेत्ति?
(ख) पशुना अपि कीदृशः गृह्यते?
(ग) नराणां प्रथमः शत्रुः कः?
(घ) मृगाः कैः सह अनुव्रजन्ति?
(ङ) उदयसमये सूर्यस्य वर्णः कीदृशः भवति?
(च) केषां सम्पत्तौ विपत्तौ च एकरूपता भवति?
(छ) आलस्यं केषां महारिपुः?
(ज) यः अनुक्तम् अपि तथ्यं जानाति, सः कः भवति?

3. पूर्णवाक्येन उत्तरत -

(क) केन समः बन्धुः नास्ति?
(ख) वसन्तस्य गुणं कः जानाति?
(ग) बुद्ध्यः कीदृश्यः भवन्ति?
(घ) नराणां प्रथमः शत्रुः कः?
(ङ) सुधियः सख्यः केन सह भवति?
(च) अस्माभिः कीदृशः वृक्षः सेवितव्यः?
(छ) अश्वः केन वीरःभवति?
(ज) भारस्य वहने कः वीरः?

4. यथानिर्देशं परिवर्तनं विधाय वाक्यानि रचयत-

(क) गुणी गुणं जानाति। (बहुवचने)
(ख) पशुः उदीरितम् अर्थं गृह्णाति। (कर्मवाच्ये)
(ग) मृगाः मृगैः सह अनुव्रजन्ति। (एकवचने)
(घ) कः छायां निवारयति? (कर्मवाच्ये)
(ङ) तेन एव वह्निना शरीरं दह्यते। (कर्तृवाच्ये)

5. सन्धिं/ सन्धिविच्छेदं कुरुत -

(क) न + अस्ति + उद्यमसमः = ...
(ख) तस्यापगमे = ...
(ग) अनुक्तम् + अपि = ...
(घ) गावश्च = ...
(ङ) नास्ति = ...
(च) रक्तः + च + अस्तमये = ...
(छ) योजकस्तत्र = ...
(ज) पशुना + अपि = ...
(झ) नागाश्च = ...
(ञ) नावसीदति = ...

6. समस्तपदं/विग्रहं लिखत-

(क) उद्यमसमः - ....
(ख) शरीरे स्थितः - ....
(ग) निर्बलः - ....
(घ) देहस्य विनाशनाय- ....
(ङ) महावृक्षः- ....
(च) समानं शीलं व्यसनं येषां तेषु ....
(छ) अयोग्यः - ....
(ज) गृहस्थः - ....
(झ) निर्जलम्- ....
(ञ) तटस्थः- ....
(ट) निराहारम्- ....

7. अधोलिखितानां पदानां विलोमपदानि पाठात् चित्वा लिखत-

(क) प्रसीदति - ....
(ख) मूर्खः - ....
(ग) बली - ....
(घ) सुलभः- ....
(ङ) संपत्तौ - ....
(च) अस्तमये- ....
(छ) सार्थकम्- ....

8. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि विकल्पेभ्यः चित्वा लिखत -

(क) आलस्यं केषां शत्रुः?
(i) पशूनाम् (ii) मनुष्याणाम्
(iii) खगानाम् (iv) देवानाम्

(ख) वसन्तस्य गुणं कः जानाति?
(i) काकः (ii) वायसः
(iii) पिकः (iv) गजः

(ग) खरः कस्मिन् वीरः?
(i) धावने (ii) भार वहने
(iii) पठने (iv) हसने

(घ) वह्निः कुत्र स्थितः?
(i) काष्ठगतो (ii) वस्त्रे
(iv) जले (iv) जले

(ङ) सिंहस्य बलं कः वेत्ति?
(i) मूषकः (ii) पिपीलिका
(iii) गजः (iv) खरः

(च) **तुरङ्गाः कैः सङ्गमनुव्रजन्ति ?**

(i) अजैः (ii) मूर्खैः
(iii) सुधिभिः (iv) तुरङ्गैः

(छ) **'केन' इत्यस्य मूलशब्दं चिनुत -**

(i) किम् (ii) तत्
(iii) इदम् (iv) सर्व

(ज) **'वहन्ति' पदे कः लकारः ?**

(i) लृट् (ii) लोट्
(iii) लट् (iv) विधिलिङ्ग

(झ) **'यः' पदे का विभक्तिः ?**

(i) प्रथमा (ii) द्वितीया
(iii) तृतीया (iv) चतुर्थी

(ञ) **'उद्दिश्य' पदे कः प्रत्ययः प्रयुक्तः?**

(i) क्त्वा (ii) तुमुन्
(iii) ल्यप् (iv) शतृ

उत्तराणि (प्रश्न-कोषाणाम्)

1. **अधोलिखितानां श्लोकानाम् अन्वयं कुरुत -**

(क) मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः आलस्यम्। उद्यमसमः बन्धुः न अस्ति यं कृत्वा (मनुष्यः) न अवसीदति।

(ख) गुणी गुणं वेत्ति निर्गुणः न वेत्ति, बली बलं वेत्ति, निर्बलः न वेत्ति, वसन्तस्य गुणं पिकः, वायसः न, सिंहस्य बलं करी मूषकः न।

(ग) फलच्छाया समन्वितः महावृक्षः सेवितव्यः। दैवात् यदि फलं नास्ति, छाया केन निवार्यते।

(घ) महताम् संपत्तौ विपत्तौ च एकरूपता भवति। यथा- सविता उदये रक्तः भवति, तथा अस्तमये च रक्तः भवति।

(ङ) नराणां देहविनाशनाय प्रथमः शत्रुः देहस्थितः क्रोधःयथा काष्ठगतः स्थितः वह्निः काष्ठम् एव दहते (तथैव शरीरस्थ क्रोधः) शरीरम् दहते।

2. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) गुणम्
(ख) उदीरितोऽर्थः
(ग) क्रोधः
(घ) मृगैः
(ङ) रक्तः
(च) महताम्
(छ) मनुष्याणाम्
(ज) विद्वान्

3. **पूर्णवाक्येन उत्तरत -**

(क) उद्यमसमः बन्धुः नास्ति।
(ख) पिकः वसन्तस्य गुणं जानाति
(ग) बुद्ध्यः परेङ्गितज्ञानफलाः भवन्ति।
(घ) नराणां प्रथमः शत्रुः क्रोधः।
(ङ) सुधियः सख्यः सुधिभिः सह भवति।
(च) अस्माभिः फलच्छायासमन्वितः वृक्षः सेवितव्यः।
(छ) अश्वः धावने वीरःभवति।
(ज) भारस्य वहने खरः वीरः।

4. **यथानिर्देशम् परिवर्तनं विधाय वाक्यानि रचयत-**

(क) गुणिनः गुणं जानन्ति।
(ख) पशुना उदीरितः अर्थः गृह्यते।
(ग) मृगः मृगेण सह अनुव्रजति।
(घ) केन छाया निवार्यते ?
(ङ) सः एव वह्निना शरीरं दहति।

5. **सन्धिं/ सन्धिविच्छेदं कुरुत -**

(क) नास्त्युद्यमसमः
(ख) तस्य + अपगमे
(ग) अनुक्तमपि
(घ) गावः + च
(ङ) न + अस्ति
(च) रक्तश्चास्तमये
(छ) योजकः + तत्र
(ज) पशुना + अपि
(झ) नागाः + च
(ञ) न + अवसीदति

6. **समस्तपदं/विग्रहं लिखत-**

(क) उद्यमेन समः
(ख) शरीरस्थः
(ग) बलस्य अभावः
(घ) देहविनाशनाय
(ङ) महान् च असौ वृक्षः
(च) समानशीलव्यसनेषु
(छ) न योग्यः
(ज) गृहे स्थितः
(झ) जलस्य अभावः
(ञ) तटे स्थितः
(ट) आहारस्य अभावः

7. **अधोलिखितानां पदानां विलोमपदानि पाठात् चित्वा लिखत-**

(क) अवसीदति
(ख) विद्वान्
(ग) निर्बलः
(घ) दुर्लभः
(ङ) विपत्तौ
(च) उदये
(छ) निरर्थकम्

8. **अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि विकल्पेभ्यः चित्वा लिखत -**

(क) (ii) मनुष्याणाम्
(ख) (iii) पिकः
(ग) (ii) भार वहने
(घ) (i) काष्ठगतो
(ङ) (iii) गजः
(च) (iv) तुरङ्गैः
(छ) (i) किम्
(ज) (iii) लट्
(झ) (i) प्रथमा
(ञ) (iii) ल्यप्

Jharkhandlab.com

सप्तमः पाठः — सौहार्दं प्रकृतेः शोभा

(प्रश्न-कोषः)

1. **एकपदेन उत्तरं लिखत-**

(क) वनराजः कैः दुरवस्थां प्राप्तः ?
(ख) कः वातावरणं कर्कशध्वनिना आकुलीकरोति?
(ग) काकचेष्टः विद्यार्थी कीदृशः छात्रः मन्यते ?
(घ) कः आत्मानं बलशाली, विशालकायः, पराक्रमी च कथयति?
(ङ) बकः कीदृशान् मीनान् क्रूरतया भक्षयति ?
(च) सौहार्दं कस्याः शोभा?
(छ) क्रुद्धः सिंहः कुत्र धावति?
(ज) "अनृतं वदसि चेत् काकः दशेत्" इति कः कथयति?
(झ) बकः वराकान् मीनान् कथं भक्षयति?

2. **अधोलिखित-प्रश्नोत्तराणि पूर्णवाक्येन लिखत-**

(क) निःसंशयं कः कृतान्तः मन्यते ?
(ख बकः वन्यजन्तूनां रक्षोपायान् कथं चिन्तयितुं कथयति ?
(ग) अन्ते प्रकृतिमाता प्रविश्य सर्वप्रथमं किं वदति?
(घ) यदि राजा सम्यक् न भवति तदा प्रजा कथं विप्लवेत् ?
(ङ) मयूरः कथं नृत्यमुद्रायां स्थितः भवति ?
(च) अन्ते सर्वे मिलित्वा कस्य राज्याभिषेकाय तत्पराः भवति ?
(छ) अस्मिन्नाटके कति पात्राणि सन्ति?

3. **रेखांकितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-**

(क) सिंहः वानराभ्यां <u>स्वरक्षायाम्</u> असमर्थः आसीत्
(ख) गजः वन्यपशून् तुदन्तं <u>शुण्डेन</u> पोथयित्वा मारयति ।
(ग) वानरः आत्मानं <u>वनराजपदाय</u> योग्यः मन्यते ।
(घ मयूरस्य नृत्यं <u>प्रकृतेः</u> आराधना
(ङ) सर्वे <u>प्रकृतिमातरं</u> प्रणमन्ति ।
(च) काकस्य वर्णः <u>कृष्णः</u> अस्ति।
(छ) <u>काकपिकयोः</u> वर्णः कृष्णः भवति।
(ज) प्रकृतिः <u>सर्वेषां</u> जननी अस्ति।

4. **वाच्यपरिवर्तनं कृत्वा लिखत-**

उदाहरणम् - क्रुद्धः सिंहः इतस्ततः धावति गर्जति च - क्रुद्धेन सिंहेन इतस्ततः धाव्यते गर्ज्यते च ।

(क) त्वया सत्यं कथितम् ।
(ख) सिंहः सर्वजन्तून् पृच्छति ।
(ग) काकः पिकस्य संततिं पालयति ।
(घ) मयूर : विधात्रा एव पक्षिराजः कृतः ।
(ङ) सर्वैः खगैः कोऽपि खगः एव वनराजः कर्तुमिष्यते स्म ।
(च) सर्वे मिलित्वा प्रकृतिसौन्दर्याय प्रयत्नं कुर्वन्तु ।

5. **समासविग्रहं समस्तपदं**

(क) तुच्छजीवैः (ख) वृक्षोपरि
(ग) पक्षिणां सम्राट् (घ) स्थिता प्रज्ञा यस्य सः
(ङ) अपूर्वम् (च) व्याघ्रचित्रकौ

6. **स्थूलपदमाधृत्य प्रकृति-प्रत्ययौ संयोज्य विभज्य वा विकल्पेभ्यः चित्वा लिखत-**

(I) **(बालक + टाप्)**
(क) बालिका (ख) बालकाः
(ग) बालकम् (घ) बालकटाप्

(ii) **(बुद्धि + मतुप्) जनः सम्माननीय भवति**
(क) बुद्धिमतुप् (ख) बुद्धिम्
(ग) बुद्धिमान् (घ) बुद्धिवान्

(iii) **पर्यावरणस्य (महत् + त्व) सर्वे जानन्ति ।**
(क) महता (ख) महत्त्वम्
(ग) महत्तता (घ) महानता

(iv) **(जन् + तल्) जागरूका भवितव्या।**
(क) जनत्वम् (ख) जानता
(ग) जनतल (घ) जनता

(v) **जलस्य (महत्त्वम्) सर्वे जानन्ति ।**
(क) महत् + त्व (ख) महत्व + तल्
(ग) महतम् + तव (घ) महत्व + त्व

(vi) **ते बालकाः (बुद्धि + मतुप्) सन्ति ।**
(क) बुद्धिमन्तः (ख) बुद्धिम्
(ग) बुद्धम् (घ) बुद्धिमतुप्

(vii) **अस्य कोकिलस्य (रम्य + त्व) पश्य ।**
(क) रमतव (ख) रम्यत्वम्
(ग) रमणीयम् (घ) रम्यतल्

(viii) **अस्याः (अनुज + टाप्) सीता अस्ति ।**
(क) अनुजा (ख) अनुजता
(ग) अनुटाप् (घ) अनुजम्

(ix) **कृष्णा (चपला) बालिका अस्ति।**
(क) चपला + त्व (ख) चपल + टाप्
(ग) चपला + टाप् (घ) चपलता + टाप्

(x) **ग्रामे (जनता) वसति ।**
(क) जनता + तल् (ख) जन + त्वम
(ग) जनता + त्व (घ) जन + तल्

(xi) **रामस्य माता (चतुरा) अस्ति।**
(क) चतुर + टाप् (ख) चतुरम् + टाप्
(ग) चतुरता +टाप् (घ) चतुरतम् + टाप्

उत्तराणि (प्रश्न-कोषाणाम्)

1. **एकपदेन -**

(क) तुच्छजीवैः (ख) काकः
(ग) आदर्शः (घ) गजः

Jharkhandlab.com

(ङ) वराकान् (च) प्रकृतेः
(छ) इतस्ततः (ज) काकः
(झ) क्रूरतया

2. पूर्णवाक्येन -

(क) निःसंशयं सः एव कृतान्तः मन्यते यः पार्थिवरूपेण सदा परैः त्रिस्तान् पीड्यमानान् जीवान् न रक्षति।

(ख) बकः वन्यजन्तूनां रक्षोपायान् शीतले जले बहुकालपर्यन्तं ध्यानमग्नः स्थितप्रज्ञः इव स्थित्वा चिन्तयितुं कथयति।

(ग) अन्ते प्रकृतिमाता प्रविश्य सर्वप्रथमं वदति - भोः भोः प्राणिनः यूयं सर्वे एव मे सन्ततिः। कथं मिथः कलहं कुर्वन्ति। वस्तुतः सर्वे वन्यजीविनः अन्योन्याश्रिताः।

(घ) यदि राजा सम्यक् न भवति तदा प्रजा अकर्णधारा जलधौ नौः इव इह विप्लवेत्।

(ङ) मयूरः पिच्छान् उद्घाट्य नृत्यमुद्रायां स्थितः भवति।

(च) अन्ते सर्वे मिलित्वा उलूकस्य राज्याभिषेकाय तत्पराः भवन्ति।

(छ) अस्मिन्नाटके एकादश पात्राणि सन्ति।

3. प्रश्ननिर्माणम्

(क) कस्याम्? (ख) केन?
(ग) कस्मै? (घ) कस्याः?
(ङ) काम्? (च) कीदृशः?
(छ) कयोः? (ज) केषाम्?

4. वाच्यम्

(क) त्वं सत्यं कथितवान्।
(ख) सिंहेन सर्वजन्तवः पृच्छ्यन्ते।
(ग) काकेन पिकस्य सन्ततिः पाल्यते
(घ) मयूरं विधाता एव पक्षिराजं कृतवान्।
(ङ) सर्वे खगाः कमपि खगं एव वनराजं कर्तुम् इच्छति स्म।
(च) सर्वैः मिलित्वा प्रकृतिसौन्दर्याय प्रयत्नः क्रियताम्।

5. समासविग्रहं समस्तपदं वा लिखत-

(क) तुच्छैः जीवैः/ तुच्छः जीवः, तैः
(ख) वृक्षस्य उपरि
(ग) पक्षिसम्राट्
(घ) स्थितप्रज्ञः
(ङ) न पूर्वम्
(च) व्याघ्रः च चित्रकः च

6. वस्तुनिष्ठ

(i) (क) बालिका (ii) (ग) बुद्धिमान्
(iii) (ख) महत्त्वम् (iv) (घ) जनता
(v) (क) महत् + त्व (vi) (क) बुद्धिमान्
(vii) (ख) रम्यत्वम् (viii) (क) अनुजा
(ix) (ख) चपल + टाप् (x) (घ) जन + तल्
(xi) (क) चतुर् + टाप्

Jharkhandlab.com

अष्टमः पाठः विचित्रः साक्षी

Jharkhandlab.com

(प्रश्न-कोषः)

प्रश्नः- 1. एकपदेन उत्तरत

(क) कीदृशे प्रदेशे पदयात्रा न सुखावहा ?
(ख) अतिथिः केन प्रबुद्धः ?
(ग) कृशकायः कः आसीत् ?
(घ) न्यायधीशः कस्मै कारागारदण्डं आदिष्टवान्?
(ङ) कं निकषा मृतशरीरम् आसीत्?
(च) विचित्रा का अभवत्
(छ) न्यायधीशः कः आसीत् ?
(ज) आरक्षी कीदृशः आसीत् ?

प्रश्नः- 2. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) निर्धनः जनः कथम् वितम् उपार्जितवान्?
(ख) जनः किमर्थं पदातिः गच्छति ?
(ग) प्रसृते निशान्धकारे सः किम अचिन्तयत्?
(घ) वस्तुतः चौरः कः आसीम् ?
(ङ) जनस्य क्रन्दनम् निशम्य आरक्षी किमुक्तवान् ?
(च) न्यायधीशः ससम्मानं कं मुक्तवान् ?
(छ) सुपुष्टदेहः कः आसीत् ?

प्रश्नः- 3. रेखांकित-पदमाधृत्य प्रश्ननिर्माण कुरुत :-

(क) <u>पुत्रं</u> द्रष्टुं सः प्रस्थितः।
(ख) करुणापरो गृही <u>तस्मै</u> आश्रयं प्रयच्छत्।
(ग) चौरस्य <u>पादध्वनिना</u> अतिथिः प्रबुद्धः।
(घ) <u>न्यायधीशः</u> बंकिमचन्द्रः आसीत्।
(ङ) सः <u>भारवेदनया</u> क्रन्दति स्म।
(च) उभौ शवं <u>चत्वरे</u> स्थापितवन्तौ।
(छ) आरक्षी <u>सुपुष्टदेहः</u> आसीत्।

प्रश्नः- 4. संधि/ संधि-विच्छेदम् वा कुरुत-

(क) पदातिरेव - (ख) निशान्धकारे
(ग) अभि + आगतम् (घ) भोजन + अन्ते
(ङ) चौरोऽयम् (च) गृह + अभ्यन्तरे
(छ) लिलयैव (ज) यदुक्तम्

प्रश्नः- 5.पर्यायपदं (समानार्थ) लिखत-

(क) वारितः (ख) क्रन्दनम्
(ग) कृशकायः (घ) उपेत्य
(ङ) तारस्वरेण (च) भूरि
(छ) प्रबुद्धः (ज) पुंस :
(झ) त्वरितम्

प्रश्नः- 6. प्रदत्त विकल्पेभ्यः शुद्धोत्तराणि चित्वा लिखत-

(i) न्यायधीशः कः अस्ति -

(क) रविन्द्रनाथटैगोरः, (ख) बंकिमचन्द्रः
(ग) आरक्षी (घ) देवसेना

(ii) 'तत्रैव' इत्यस्य विच्छेदः अस्ति-

(क) तत्र + व (ख) तत्र + ऐव
(ग) तत्र + एव (घ) तत्रै + व

(iii) 'भारवेदनया' इति पदे का विभक्ति-

(क) सप्तमी (ख) तृतीया
(ग) द्वितीया (घ) प्रथमा

(iv) 'मुक्तवान्' इति पदे कः प्रत्ययः?

(क) क्त्वा (ख) वान
(ग) क्तवतु (घ) तव्यत्

(v) 'विचित्रा' इति पदे कः प्रत्ययः

(क) टाप् (ख) क्त
(ग) ङीप् (घ) तव्यत्

(vi) 'तस्मै' इत्यस्य मूल-पदं किम् अस्ति-

(क) तत् (ख) तस्य
(ग) अहम् (घ) इदम्

(vii) निकषा - योगे का विभक्ति स्थात्-

(क) द्वितीया (ख) पंचमी
(ग) पष्ठी (घ) चतुर्थी

(Viii) निर्धनस्य जनस्य तनयः कुत्र प्रतिवसति स्म ?

(क) छात्रावासे (ख) कारागारे
(ग) विद्यालये (घ) महाविद्यालये।

(ix) 'तत्रोपेत्य' इत्यस्य विच्छेदः अस्ति-

(क) तत्रो + पेत्य (ख) तत्र + उपेत्य
(ग) तत् + पेव्य (घ) तत्र + पेत्य

(x) 'निशम्य' इति पदे कः प्रत्ययः ?

(क) ल्यप् (ख) क्त्वा
(ग) तुमुन् (घ) शानच्

(xi) 'कश्चन्' इत्यस्य संधि विच्छेदः अस्ति -

(क) कः + चन् (ख) कश+चन्
(ग) क + रचन् (घ) क + चन्

उत्तराणि (प्रश्न-कोषाणाम्)

1. एकपदेन -

(क) विजनप्रदेथे (ख) पादध्वनिना
(ग) अभियुक्तः (घ) आरक्षिणे
(ङ) राजमार्गम् (च) साक्षी
(छ) बंकिमचन्द्रः (ज) स्थूलकायः

2. पूर्णवाक्येन -

(क) निर्धनः जनः भूरि परिश्रभ्य वितम् उपार्जितवान्।
(ख) अर्थाभाव-कारणेन जनः बसयानम् विहाय पदातिः गच्छति।

(ग) प्रसृते निशान्धकारे सः अचिन्तयत्-निशान्धकारे प्रसृते विजनेप्रदेशे पदयात्रा न शुभावहा।

(घ) वस्तुतः चैरः आरक्षी एव आसीत्।

(ङ) जनस्य क्रन्दनम् श्रुत्वा आरक्षी उक्तवान्-रे दुष्ट! तस्मिन् दिने त्वयाऽहं चोरितायाः मञ्जूषायाः ग्रहणात् वारिता। इदानीं निजकृतस्य फलं भुङ्क्ष्व। अस्मिन् चैर्याभियोगे त्वं वर्ष-त्रयस्य कारावासं लप्स्यसे।

(च) न्यायधीशः ससम्मानम् तं निर्धनं-जनम् मुक्तवान्

(छ) सुपुष्टदेहः आरक्षीः एवं आसीत्।

3. **प्रश्ननिर्माणम्**

(क) कम् ....?

(ख) कस्मै ....?

(ग) केन ....?

(घ) कः ....?

(ङ) कया ....?

(च) कुत्र ....?

(छ) कीदृशः ....?

4. **संधिः-**

(क) पदातिः + एव
(ख) निशा + अन्धकारे
(ग) अभ्यागतम्
(घ) भोजनान्ते
(ङ) चौरः + अयम्
(च) गृहाभ्यन्तरे
(छ) लीलया + एव
(ज) यत् + उक्तम्

5. **पर्यायपदम्**

(क) निवारितः
(ख) रोदनम्
(ग) दुर्बलम् शरीरम्
(घ) समीपम् गत्वा
(ङ) उच्चस्वरेण
(च) पर्याप्तम्
(छ) जागृतः
(ज) पुरुषः
(झ) शीघ्रम्

6. **शुद्धोत्तराणि**

(i) (ख) बंकिमचन्द्रः
(ii) (ग) तत्र + एव
(iii) (ख) तृतीया
(iv) (ग) क्तवतु
(v) (क) टाप्
(vi) (क) द्वितीया
(vii) (क) द्वितीया
(viii) (क) छात्रावासे
(ix) (ख) तत्र + उपेत्य
(x) (क) ल्यप्
(xi) (क) कः + चन्

Jharkhandlab.com

नवमः पाठः — सूक्तयः

(प्रश्न-कोषः)

प्रश्नः-1 एकपदेन उत्तरत -

(क) पिता पुत्राय बाल्ये किं यच्छति ?
(ख) विमूढधीः कीदृशीं वाचं परित्यजति ?
(ग) अस्मिन् लोके के एव चक्षुष्मन्तः कथिताः ?
(घ) प्राणभ्योऽपि कः रक्षणीयः ?
(ङ) आत्मनः श्रेयः इच्छन् नरः कीदृशं कार्यं न कुर्यात् ?
(च) वाचि किम् भवेत् ?
(छ) प्रथमो धर्मः कः अस्ति।
(ज) पिता विद्याधनम् कस्मै यच्छति ?
(झ) चित्ते किम् भवेत् ?
(ञ) विमूढ़धीः कीदृशं फलं भुङ्क्ते ?

प्रश्नः-2 रेखांकितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणम् कुरुत-

(क) <u>विभूढधीः</u> पक्वं फलं परित्यज्य अपक्वं फलं भुङ्क्ते।
(ख) संसारं <u>विद्वांसः</u> नेत्रवन्तः कथ्यन्ते।
(ग) <u>जनकेन</u> विद्या धनं दीयते।
(घ) <u>धैर्यवान्</u> लोके परिभवं म प्राप्नोति।
(ङ) पिता <u>पुत्राय</u> महत्-विद्या धनम् दीयते।
(च) आत्मकल्याणम् इच्छन् नरः <u>परेषाम्</u> अनिष्टं न कुर्यात्।

प्रश्नः-3 श्लोकानाम् अन्वयम् उचितपद क्रमेण पूरयत-

(क) पिता.................. बाल्ये महत् .... यच्छति। अस्य पिता कि तपः तेपे इत्युक्तिः ....
(ख) येन .... यत् प्रोक्तम् तस्य तत्वार्थस्य .... येन कर्तुं समर्थः भवेत् सः .... इति इरितः।
(ग) यः आत्मनः श्रेयः .... सुखानि च इच्छति, सः परेभ्यः अहितं .... कदापि च न ....।

प्रश्नः-4 विलोम-पदं लिखत-

(क) पक्वः (ख) विमूढधीः
(ग) कातरः (घ) कृतज्ञता
(ङ) आलस्यम् (च) परूषा

प्रश्नः-5 समानार्थकं पदं लिखत-

(क) प्रभूतम् (ख) श्रेयः
(ग) चित्तम् (घ) मुखम्
(ङ) विमूदधीः (च) परूषम्
(छ) अकातरः (ज) चक्षुमन्तः

प्रश्नः-6 विकल्पेभ्यः शुद्धोत्तराणि चित्वा लिखत-

(क) पिता पुत्राय बाल्ये किम् यच्छति?
(i) विद्याधनम् (ii) तपोबलम्
(iii) तपः (iv) यच्छति

(ख) 'कृतज्ञता' इति पदे कः प्रत्ययः
(i) कृतज्ञ + तल् (ii) कृतज्ञ + टाप्
(iii) कृ + तव्यत् (iv) कृत + तव्यत्

(ग) 'वाचि' इति पदे का विभक्तिः स्यात्
(i) प्रथमा (i) सप्तमी
(iii) तृतीया (iv) पंचमी

(घ) विमूढधीः किम् भुड.क्ते?
(i) पक्वं फलम् (ii) अपक्वं फलम्
(iii) पक्वं अपक्वयं द्वयोः (iv) वाचम्

(ड.) लोकेस्मिन् 'चक्षुष्मन्तः' के कथिताः?
(i) छात्राः (ii) राजानः
(iii) विद्वांसः (iv) रिपवः

(च) 'विमूढधीः' इति पदास्य विग्रहः अस्ति-
(i) विमूढा धीः यस्य सः (ii) विमूढाधीः येन सः
(iii) विमूढाधीः यः सः (iv) विमूढाधीः धीः यः सः

(छ) 'वदने' इत्यस्य समानार्थकः शब्दः अस्ति-
(i) मुखे (ii) चक्षुः
(iii) वाचम् (iv) हस्ते

(ज) 'परैर्न' इत्यस्य विच्छेदः अस्ति-
(i) परैः + न (ii) न + परै
(iii) परै + न (iv) परैः + र्न

(झ) केनापि इत्यस्य संधिविच्छेदः अस्ति-
(i) केन + अपि (ii) केन + आपि
(iii) केना + पि (iv) के + अपि

(ञ) 'श्रेयः' इत्यस्यार्थः अस्ति-
(i) कल्याणम् (ii) अकल्याणम्
(iii) श्रय (iv) कातरः

उत्तराणि (प्रश्न-कोषाणाम्)

1. एकपदेन-

(क) विद्याधनम् (ख) धर्मप्रदाम्
(ग) विद्वांसः (घ) सदाचारम्
(ङ) अहितम् (च) अवक्रता
(छ) आचारः (ज) पुत्राय
(झ) अवक्रता
(ञ) अपक्वम्

2. प्रश्न-निर्माणम्-

(क) कः. ....?
(ख) के ....?
(ग) केन ....?
(घ) कः ....?
(ङ) कस्मै ....?
(च) केषाम् ....?

Jharkhandlab.com

3. **अन्वयः**

(क) (i) पुत्राय (ii) विद्याधनम्
(iii) तत्कृतज्ञता

(ख) (i) केनापि (ii) निर्णयः
(iii) विवेकः

(ग) (i) प्रभूतानि (i) कर्म
(iii) कुर्यात्

4. **विलोम-पदम्-**

(क)	अपक्वः	(ख)	सुधीः
(ग)	अकातरः	(घ)	कृतघ्नता
(ङ)	उद्यमः	(च)	कोमलम्

5. **समानार्थकं पदम्-**

(क)	अत्यधिकम्	(ख)	कल्याणम्
(ग)	मनः	(घ)	वदने
(ङ)	मूर्खः	(च)	कठोरम्
(छ)	निर्भीकः	(ज)	नेत्रवन्तः

6. **विकल्पेभ्यः शुद्धोत्तराणि**

(क) (i) विद्याधनम्
(ख) (i) तल् प्रत्ययः
(ग) (ii) सप्तमी
(घ) (ii) अपक्वं फलम्
(ङ) (iii) विद्वांसः
(च) (i) विमुढा धीः यस्य सः
(छ) (i) मुखे
(ज) (i) परैः + न
(झ) (i) केन + अपि
(ञ) (i) कल्याणम्

Jharkhandlab.com

दशमः पाठः भूकम्पविभीषिका

Jharkhandlab.com

(प्रश्न-कोषः)

1. एकपदेन उत्तरं लिखत-

क. कस्य दारुण-विभीषिका गुर्जरक्षेत्रं ध्वंसावशेषेषु परिवर्तितवती ?
ख. कीदृशानि भवनानि धाराशायीनि जातानि ?
ग. दुर्वार-जलधाराभिः किम् उपस्थितम् ?
घ. कस्य उपशमनस्य स्थिरोपायः नास्ति ?
ङ. कीदृशाः प्राणिनः भूकम्पेन निहन्यन्ते ?

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

क. समस्तराष्ट्रं कीदृशे उल्लासे मग्नम् आसीत् ?
ख. भूकम्पस्य केन्द्रबिन्दुः कः जनपदः आसीत् ?
ग. पृथिव्याः स्खलनात् किं जायते ?
घ. समग्रं विश्वं कैः आतङ्कितं दृश्यते ?
ङ. केषां विस्फोटैरपि भूकम्पो जायते ?

3. रेखांकित-पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) भूकम्पविभीषिका विशेषेण कच्छजनपदं ध्वंसावशेषेषु परिवर्तितवती।
(ख) वैज्ञानिकाः कथयन्ति यत् पृथिव्याः अन्तर्गर्भे, पाषाणशिलानां संघर्षणेन कम्पनं जायते।
(ग) विवशाः प्राणिनः आकाशे पिपीलिकाः इव निहन्यन्ते।
(घ) एतादृशी भयावहघटना गढ़वालक्षेत्रे घटिता।
(ङ) तदिदानीं भूकम्पकारणं विचारणीयं तिष्ठति।

4. 'भूकम्पविषये' पञ्चवाक्यमितम् अनुच्छेदं लिखत।

5. कोष्ठकेषु दत्तेषु धातुषु निर्देशानुसारं परिवर्तनं विधाय रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) समग्रं भारतं उल्लासे मग्नः __________ (अस् + लट् लकारे)
(ख) भूकम्पविभीषिका कच्छजनपदं विनष्टं __________ (कृ + क्तवतु + ङीप्)
(ग) क्षणेनैव प्राणिनः गृहविहीनाः __________ (भू + लङ, प्रथमः पुरुषः बहुवचनम्)
(घ) शान्तानि पञ्चतत्त्वानि भूतलस्य योगक्षेमाभ्यां __________ (भू + लट्, प्रथम प्रथम-पुरुषः बहुवचनम्)
(ङ) मानवाः __________ यत् बहुभूमिकभवननिर्माणं करणीयम् न वा? (पृच्छ् + लट्, प्रथम-पुरुषः बहुवचनम्)
(च) नदीवेगेन ग्रामाः तदुदरे __________ (सम् + आ + विश् + विधिलिङ, प्रथम पुरुषः एकवचनम्)

6. सन्धिं/सन्धिविच्छेदं च कुरुत-

(अ) परसवर्णसन्धिनियमानुसारम्

(क) किञ्च = __________ + च
(ख) __________ = नगरम् + तु
(ग) विपन्नञ्च = __________ + __________
(घ) __________ = किम् + नु
(ङ) भुजनगरन्तु = __________ + __________
(च) __________ = सम् + चयः

(आ) विसर्गसन्धिनियमानुसारम्

(क) शिशवस्तु = __________ + __________
(ख) __________ = विस्फोटैः + अपि
(ग) सहस्रशोऽन्ये = __________ + अन्ये
(घ) विचित्रोऽयम् = विचित्रः + __________
(ङ) __________ = भूकम्पः + जायते
(च) वामनकल्प एव = __________ + __________

7(अ). 'क' स्तम्भे पदानि दत्तानि 'ख' स्तम्भे विलोमपदानि, तयोः संयोगं कुरुत-

क	ख
सम्पन्नम्	प्रविशन्तीभिः
ध्वस्तभवनेषु	सुचिरेणैव
निस्सरन्तीभिः	विपन्नम्
निर्माय	नवनिर्मितभवनेषु
क्षणेनैव	विनाश्य

7(आ). 'क' स्तम्भे पदानि दत्तानि 'ख' स्तम्भे समानार्थकपदानि, तयोः संयोगं कुरुत-

क	ख
पर्याकुलम्	नष्टाः
विशीर्णाः	क्रोधयुक्ताम्
उद्गिरन्तः	संत्रोट्य
विदार्य	व्याकुलम्
प्रकुपिताम्	प्रकटयन्तः

8 (अ). उदाहरणमनुसृत्य प्रकृति-प्रत्यययोः विभागं कुरुत-

यथा- परिवर्तितवती – परि + वृत् + क्तवतु + ङीप् (स्त्री)
धृतवान् – ________ + ________
हसन् – ________ + ________
विशीर्णा – वि + श + क्त + ________
प्रचलन्ती – ________ + ________ + शतृ + ङीप् (स्त्री)
हतः – ________ + ________

8(आ). पाठात् विचित्य समस्तपदानि लिखत-

महत् च तत् कम्पनम् – ____________________
दारुणा च सा विभीषिका – ____________________
ध्वस्तेषु च तेषु भवनेषु – ____________________
प्राक्तने च तस्मिन् युगे – ____________________
महत् च तत् राष्ट्र तस्मिन् – ____________________

उत्तराणि (प्रश्न-कोषाणाम्)

1. एकपदेन उत्तरं लिखत-

क. भूकम्पस्य
ख. बहुभूमिकानि
ग. महाप्लावनदृश्यम्

घ. दैवीप्रकोपस्य/भूकम्पस्य
ङ. विवशाः

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-

क. समस्तराष्ट्रं नृत्य-गीतवादित्राणाम् उल्लासे मग्नम् आसीत्।
ख. भूकम्पस्य केन्द्रबिन्दुः कच्छजनपदः आसीत्।
ग. पृथिव्याः स्खलनात् महाविनाशदृश्यं जायते।
घ. समग्रं विश्वं प्राकृतिकापदाभिः आतङ्कितं दृश्यते।
ङ. ज्वालामुखपर्वतानां विस्फोटैरपि भूकम्पो जायते।

3. रेखांकितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) भूकम्पविभीषिका विशेषेण कच्छजनपदं केषु परिवर्तितवती?
(ख) के कथयन्ति यत् पृथिव्याः अन्तर्गर्भे पाषाणशिलानां संघर्षणेन कम्पनं जायते?
(ग) विवशाः प्राणिनः कुत्र/कस्मिन् पिपीलिकाः इव निहन्यन्ते?
(घ) कीदृशी भयावहघटना गढ़वालक्षेत्रे घटिता?
(ङ) तदिदानीं किं विचारणीयं तिष्ठति?

4. 'भूकम्पविषये' पञ्चवाक्यमितम् अनुच्छेदं लिखत।

(i) भूकम्पः एका प्राकृतिकी आपदा अस्ति।
(ii) यदा पृथिव्या अन्तर्गर्भे स्थितासु शिलासु संघर्षणं भवति तदा भूकम्पः जायते।
(iii) भूकम्पेन अपरिमित लावाराः धरातलात् निर्गत्य नदीवेगेन प्रवहन्तः ग्रामेषु नगरेषु वा महाविनाशं कुर्वन्ति।
(iv) भूकम्पेन अनेके विवशाः प्राणिनः निहन्यन्ते।
(v) अतः अस्माभिः प्रकृतेः विरुद्धानि कार्याणि न करणीयानि।
(vi) बहुभूमिकभवननिर्माणं नदीतटं बन्धान्, वृक्षाणां कर्तनं वा न करणीयम्।

5. कोष्ठकेषु दत्तेषु धातुषु निर्देशानुसारं परिवर्तनं विधाय रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) अस्ति
(ख) कृतवती
(ग) अभवन्
(घ) भवन्ति
(ङ) पृच्छन्ति
(च) समाविशेयुः

6. सन्धिं/सन्धिविच्छेदं च कुरुत-

(अ) परसवर्णसन्धिनियमानुसारम्

(क) किम्
(ख) नगरन्तु
(ग) विपन्नम् + च
(घ) किन्नु
(ङ) भुजनगरम् + तु
(च) सञ्चयः

(आ) विसर्गसन्धिनियमानुसारम्

(क) शिशवः + तु
(ख) विस्फोटैरपि
(ग) सहस्रशः
(घ) अयम्
(ङ) भूकम्पो जायते
(च) वामनकल्पः + एव

7(अ). 'क' स्तम्भे पदानि दत्तानि 'ख' स्तम्भे विलोमपदानि, तयोः संयोगं कुरुत-

क		ख
सम्पन्नम्	-	विपन्नम्
ध्वस्तभवनेषु	-	नवनिर्मितभवनेषु
निस्सरन्तीभिः	-	प्रविशन्तीभिः
निर्माय	-	विनाश्य
क्षणेनैव	-	सुचिरेणैव

(आ). 'क' स्तम्भे पदानि दत्तानि 'ख' स्तम्भे समानार्थकपदानि, तयोः संयोगं कुरुत-

क		ख
पर्याकुलम्	-	व्याकुलम्
विशीर्णाः	-	नष्टाः
उद्गिरन्तः	-	प्रकटयन्तः
विदार्य	-	संत्रोट्य
प्रकुपिताम्	-	क्रोधयुक्ताम्

8(अ). उदाहरणमनुसृत्य प्रकृति-प्रत्यययोः विभागं कुरुत-

यथा- परिवर्तितवती - परि + वृत् + क्तवतु + ङीप् (स्त्री)

धृतवान्	- धृ + क्तवतु
हसन्	- हस् + शतृ
विशीर्णा	- वि + शृ + क्त + टाप् (स्त्री)
प्रचलन्ती	- प्र + चल् + शतृ + ङीप् (स्त्री)
हतः	- हन् + क्त

(आ). पाठात् विचित्य समस्तपदानि लिखत-

महत् च तत् कम्पनम्	- महत्कम्पनम्
दारुणा च सा विभीषिका	- दारुणविभीषिका
ध्वस्तेषु च तेषु भवनेषु	- ध्वस्तभवनेषु
प्राक्तने च तस्मिन् युगे	- प्राग्युगे
महत् च तत् राष्ट्रं तस्मिन्	- महद्राष्ट्रम्

अतिरिक्तसम्भावितप्रश्नाः-

1. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

क. 'पृथ्वी कस्मात् प्रकम्पते?' इति विषये वैज्ञानिकाः किं कथयन्ति ?

2. रेखांकित-पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) <u>धरां</u> विदार्य बहिर्निष्क्रामति।
(ख) <u>वैज्ञानिकाः</u> कथयन्ति।
(ग) <u>करुणकरुणं</u> क्रन्दन्ति स्म।
(घ) <u>भूमिः</u> फालद्वये विभक्ता।
(ङ) इयं <u>भूकम्पस्य</u> विभीषिका आसीत्।

3. बहुविकल्पीयाः प्रश्नाः-

(i) गुजरातप्रान्ते कदा धरायाः महत्कम्पनं जातम् ?

क. 2005 ईस्वीये ख. 2001 ईस्वीये
ग. 2009 ईस्वीये घ. 2003 ईस्वीये

(ii) 'बहुभूमिकभवननिर्माणं न करणीयम्।' इति के कथयन्ति ?

क. मानवाः ख. चिकित्सकाः
ग. भूकम्परहस्यज्ञाः घ. शिक्षकाः

jharkhandlab.com

(iii) **कानि शान्तानि एव भूतलस्य योगक्षेमाभ्यां कल्पन्ते ?**

क. भवनानि ख. पञ्चतत्वानि
ग. क्षेत्राणि घ. गगनानि

(iv) **ज्वालामुद्गिरन्त पर्वता अपि भीषणं कं जनयन्ति?**

क. खनिजं ख. भूकम्पं
ग. जलं घ. विस्फोटं

(v) **कश्मीरप्रान्ते कदा धराया: महत्कम्पनं जातम्?**

क. 2001 ईस्वीये ख. 2005 ईस्वीये
ग. 2010 ईस्वीये घ. 2012 ईस्वीये

4. **विकल्पेभ्यः समुचित-पर्याय-पदानि चित्वा लिखत-**

(i) **कुक्षौ**

क. उदरे ख. कक्षायां
ग. पर्यावरणे घ. भूमेः

(ii) **विचलनम्**

क. खनिजम् ख. पर्यावरणम्
ग. संस्खलनम् घ. कम्पनम्

(iii) **निर्गच्छन्तीभिः**

क. विशीर्णाः ख. निस्सरन्तीभिः
ग. गतिभिः घ. जलधाराभिः

(iv) **उत्पाटिताः**

क. उत्खाताः ख. उत्पाताः
ग. विदार्य घ. विशीर्णाः

(v) **उद्गिरन्तः**

क. विपन्नम् ख. प्रकटयन्तः
ग. वामनकल्पः घ. भूकम्पः

5. **समुचित-विलोमपदानि चित्वा लिखत-**

(i) **प्रसादः**

क. प्रकोपः ख. प्रासादः
ग. उत्खातः घ. दुर्वारः

(ii) **अविचलनम्**

क. खनिजम् ख. संस्खलनम्
ग. स्थिरम् घ. विपन्नम्

(iii) **मरणम्**

क. हसनम् ख. महाप्लावनम्
ग. विपन्नम् घ. जीवनम्

(iv) **विनाश्य**

क. निर्माय ख. निर्माणम्
ग. विभक्तः घ. विनाशः

(v) **व्यवस्थितम्**

क. विपर्यस्तम् ख. स्थिरम्
ग. विख्यातम् घ. विस्थापितम्

उत्तराणि (प्रश्न-कोषाणाम्)

1. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) 'पृथ्वी कस्मात् प्रकम्पते?' इति विषये वैज्ञानिकाः कथयन्ति यत् पृथिव्या अन्तर्गर्भे विद्यमानाः पाषाण-शिलाः यदा संघर्षणवशात् त्रुट्यन्ति तदा भीषणं संस्खलनात् पृथिव्यां कम्पनं जायते।

2. **स्थूलपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-**

(क) कां विदार्य बहिर्निष्क्रामति?
(ख) के कथयन्ति?
(ग) कीदृशं क्रन्दन्ति स्म?
(घ) का फालद्वये विभक्ता?
(ङ) इयं कस्य विभीषिका आसीत्?

3. **बहुविकल्पीयाः प्रश्नाः-**

(i) (ख) 2001 ईस्वीये
(ii) (ग) भूकम्परहस्यज्ञाः
(iii) (ख) पञ्चतत्वानि
(iv) (ख) भूकम्पं
(v) (ख) 2005 ईस्वीये

4. **विकल्पेभ्यः समुचित-पर्याय-पदानि चित्वा लिखत-**

(i) क. उदरे
(ii) ग. संस्खलनम्
(iii) ख. निस्सरन्तीभिः
(iv) क. उत्खाताः
(v) ख. प्रकटयन्तः

5. **समुचित-विलोमपदानि चित्वा लिखत-**

(i) क. प्रकोपः
(ii) ख. संस्खलनम्
(iii) घ. जीवनम्
(iv) क. निर्माय
(v) क. विपर्यस्तम्

Jharkhandlab.com

एकादशः पाठः — प्राणेभ्योऽपि प्रियः सुहृद्

(प्रश्न-कोषः)

1. **एकपदेन उत्तरं लिखत-**

(क) कः चन्दनदासं द्रष्टुम् इच्छति?
(ख) चन्दनदासस्य वाणिज्या कीदृशी आसीत्?
(ग) चाणक्यः कं द्रष्टुम् इच्छति?
(घ) कः शङ्कनीयः भवति?

2. **अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-**

(क) चन्दनदासः कस्य गृहजनं स्वगृहे रक्षति स्म ?
(ख) तृणानां केन सह विरोधः अस्ति?
(ग) चाणक्यः कं द्रष्टुमिच्छति?
(घ) पाठेऽस्मिन् चन्दनदासस्य तुलना केन सह कृता?
(ङ) प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियं के इच्छन्ति?
(च) कस्य प्रसादेन चन्दनदासस्य वाणिज्या अखण्डिता?

3. **रेखांकित-पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-**

(क) <u>शिविना</u> विना इदं दुष्करं कार्यं कः कुर्यात् ।
(ख) प्राणेभ्योऽपि प्रियः <u>सुहृत्</u> ।
(ग) <u>आर्यस्य</u> प्रसादेन मे वाणिज्या अखण्डिता ।
(घ) प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः <u>राजानः</u> प्रतिप्रियमिच्छन्ति ।
(ङ) <u>तृणानाम्</u> अग्निना सह विरोधो भवति ।

4. **यथानिर्देशमुत्तरत-**

(क) 'अखण्डिता मे वाणिज्या'- अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं किम्?
(ख) पूर्वम् 'अनृतम्' इदानीम् आसीत् इति परस्परविरुद्धे वचने - अस्मात् वाक्यात् 'अधुना' इति पदस्य समानार्थकपदं चित्वा लिखत ।
(ग) 'आर्य! किं मे भयं दर्शयसि' अत्र' आर्य' इति सम्बोधनपदं कस्मै प्रयुक्तम् ?
(घ) 'प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियमिच्छन्ति राजानः' अस्मिन् वाक्ये कर्तृपदं किम्?
(ङ) 'तस्मिन् समये आसीदस्मद्गृहे' अस्मिन् वाक्ये विशेष्यपदं किम्?

5. **निर्देशानुसारं सन्धिं/सन्धिविच्छेदं कुरुत-**

(क) यथा- कः + अपि - कोऽपि
प्राणेभ्यः + अपि - ---------
------- + अस्मि - सज्जोऽस्मि ।
आत्मनः + -------- - आत्मनोऽधिकारसदृशम्
(ख) यथा- सत् + चित् - सच्चित्
शरत् + चन्द्रः - --------
कदाचित् + च - ---------

6. **कोष्ठकेषु दत्तयोः पदयोः शुद्धं विकल्पं विचित्य रिक्तस्थानानि पूरयत-**

(क) --------- विना इदं दुष्करं कः कुर्यात्। (चन्दनदासस्य / चन्दनदासेन)
(ख) --------- इदं वृत्तान्तं निवेदयामि । (गुरवे / गुरोः)
(ग) आर्यस्य ----------- अखण्डिता मे वणिज्या । (प्रसादात् / प्रसादेन)
(घ) अलम् --------- । (कलहेन / कलहात्)
(ङ) वीरः ---------- बालं रक्षति । (सिंहेन / सिंहात्)
(च) ---------- भीतः मम भ्राता सोपानात् अपतत्। (कुक्कुरेण/ कुक्कुरात्)
(छ) छात्रः -------- प्रश्नं पृच्छति। (आचार्यम् / आचार्येण)

7. **अधोदत्तमञ्जूषातः समुचितविलोमपदानि गृहीत्वा लिखत-**

(असत्यम्, पश्चात्, गुणः, आदरः, तदानीम्, तत्र)

(क) अनादरः (ख) दोषः
(ग) पूर्वम् (घ) सत्यम्
(ङ) इदानीम् (च) अत्र

8. **उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितानि पदानि प्रयुज्य पञ्चवाक्यानि रचयत-यथा निष्क्रम्य - शिक्षिका पुस्तकालयात् निष्क्रम्य कक्षां प्रविशति ।**

(क) उपसृत्य (ख) प्रविश्य
(ग) द्रष्टुम् (घ) इदानीम्
(ङ) अत्र

उत्तराणि

1- **एकपदेन उत्तरं लिखत-**

क- चाणक्यः। ख- अखण्डिता।
ग- चन्दनदासं। घ- अत्यादरः।

2. **अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत-**

(क) चन्दनदासः अमात्यराक्षस्य गृहजनं स्वगृहे रक्षति।
(ख) तृणानां अग्निना सह विरोधः अस्ति।
(ग) चाणक्यः चन्दनदासं द्रष्टुमिच्छति।
(घ) पाठेऽस्मिन् चन्दनदासस्य तुलना शिविना सह कृता।
(ङ) प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियं राजान इच्छन्ति?
(च) चन्द्रगुप्तस्य प्रसादेन चन्दनदासस्य वाणिज्या अखण्डिता।

3. **रेखांकित-पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-**

(क) <u>केन</u> विना इदं दुष्करं कार्यं कः कुर्यात् ?
(ख) प्राणेभ्योऽपि प्रियः <u>कः</u> ?
(ग) <u>कस्य</u> प्रसादेन मे वाणिज्या अखण्डिता ?
(घ) प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः <u>के</u> प्रतिप्रियमिच्छन्ति ?
(ङ) <u>केषाम्</u> अग्निना सह विरोधो भवति?

4. **यथानिर्देशमुत्तरत-**

(क) अखण्डिता
(ख) इदानीम्
(ग) चाणक्याय
(घ) राजानः
(ङ) गृहे

5. **निर्देशानुसारं सन्धिं/सन्धिविच्छेदं कुरुत-**

(क) यथा - कः + अपि - कोऽपि
प्राणेभ्योऽपि
सज्जः

Jharkhandlab.com

अधिकारसदृशम्
(ख) यथा- सत् + चित् - सच्चित्
शरच्चन्द्रः,
कदाचिच्च

6. **कोष्ठकेषु दत्तयोः पदयोः शुद्धं विकल्पं विचित्य रिक्तस्थानानि पूरयत-**

(क) चन्दनदासेन
(ख) गुरवे
(ग) प्रसादेन
(घ) कलहेन
(ङ) सिंहात्
(च) कुक्कुरात्
(छ) आचार्यम्

7. **अधोदत्तमञ्जूषातः समुचितविलोमपदानि गृहीत्वा लिखत-**

(असत्यम्, पश्चात्, गुणः, आदरः, तदानीम्, तत्र)

(क) अनादरः-आदरः (ख) दोषः-गुणः
(ग) पूर्वम्-पश्चात् (घ) सत्यम्-असत्यम्
(ङ) इदानीम्-तदानीम् (च) अत्र-तत्र

8. **उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितानि पदानि प्रयुज्य पञ्चवाक्यानि रचयत-**

यथा निष्क्रम्य - शिक्षिका पुस्तकालयात् निष्क्रम्य कक्षां प्रविशति।

(क) उपसृत्य (ख) प्रविश्य
(ग) द्रष्टुम् (घ) इदानीम्
(ङ) अत्र

(क) उपसृत्य - छात्रः गुरुम उपसृत्य तिष्ठति।
(ख) प्रविश्य - सः गृहं प्रविश्य कार्यं करोति।
(ग) द्रष्टुम् - रामः सीतां द्रष्टुम इच्छति।
(घ) इदानीम् - इदानीं मा गच्छ।
(ङ) अत्र - अत्र तिष्ठ।

अतिरिक्तसम्भावितप्रश्नाः-

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) चन्दनदासः कः आसीत् ?
(ख) राजप्रसादेन तस्य वाणिज्या कीदृशी ?
(ग) राजनि कीदृशः भव ?
(घ) अमात्यः कीदृशः आसीत् ?
(ङ) अस्मद् गृहे कस्य गृहजनः पूर्वम् आसीत ?

2. **बहुविकल्पीयाः प्रश्नाः-**

समुचितविलोमपदानि चित्वा लिखत-

(i) **प्रविश्य**
क. निष्क्रम्य ख. आगत्य
ग. गच्छन् घ. पठन्

(ii) **अप्रियम्**
क. सत्यम् ख. कठोरम्
ग. प्रियम् घ. मधुरम्

(iii) **सत्यम्**
क. मधुरम् ख. असत्यम्
ग. कोमलम् घ. हर्षितम्

(iv) **आयान्ति, आगच्छन्ति**
क. गच्छन्ति ख. अवगच्छन्ति
ग. उत्तिष्ठन्ति घ. नृत्यन्ति

(v) **सन्तम्**
क. सन्ति ख. असन्तम्
ग. ऋषिः घ. सज्जनः

3. **समुचितपर्यायपदानि चित्वा लिखत-**

(i) **मन्त्री**
क. अमात्यः ख. राजा
ग. आर्यः घ. जनता

(ii) **आच्छाद्य**
क. निष्क्रम्य ख. अलीकम्
ग. अमात्यः घ. पिधाय

(iii) **दुःखाभावः**
क. अपरिक्लेशः ख. असन्तम्
ग. अभावः घ. परिक्लेशः

(iv) **स्वगतम्**
क. स्वागतम् ख. आत्मगतम्
ग. अन्तर्गतम् घ. संवेदनम्

(v) **उपगम्य**
क. उपागमम् ख. अनुसृत्य
ग. उपसृत्य घ. परिक्रम्य

अतिरिक्तसम्भावितप्रश्नाः- उत्तराणि

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) मणिकारश्रेष्ठी (ख) अखण्डिता
(ग) अविरुद्धवृत्तिः (घ) राजापथ्यकारी
(ङ) अमात्यराक्षसस्य।

2. **बहुविकल्पीयाः प्रश्नाः-**

समुचित-विलोमपदानि चित्वा लिखत-

(i) क. निष्क्रम्य (ii) ग. प्रियम्
(iii) ख. असत्यम् (iv) क. गच्छन्ति
(v) ख. असन्तम्

3. **समुचितपर्यायपदानि चित्वा लिखत-**

(i) क. अमात्यः (ii) घ. पिधाय
(iii) क. अपरिक्लेशः (iv) ख. आत्मगतम्
(v) ग. उपसृत्य

jharkhandlab.com

द्वादशः पाठः अन्योक्तयः

Jharkhandlab.com

(प्रश्न-कोषः)

1. **एकपदेन उत्तरं लिखत**
   - (क) कस्य शोभा एकेन राजहंसेन भवति?
   - (ख) सरसः तीरे के वसन्ति?
   - (ग) कः पिपासितः म्रियते?
   - (घ) के रसालमुकुलानि समाश्रयन्ते?
   - (ङ) अम्भोदाः कुत्र सन्ति?

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत -**
   - (क) सरसः शोभा केन भवति?
   - (ख) चातकः किमर्थं मानी कथ्यते?
   - (ग) मीनः कदा दीनां गतिं प्राप्नोति?
   - (घ) कानि पूरयित्वा जलदः रिक्तः भवति?
   - (ङ) वृष्टिभिः वसुधां के आर्द्रयन्ति?

3. **अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -**
   - (क) मालाकारः <u>तोयैः</u> तरोः पुष्टिं करोति।
   - (ख) भृङ्गाः <u>रसालमुकुलानि</u> समाश्रयन्ते।
   - (ग) <u>पतङ्गाः</u> अम्बरपथम् आपेदिरे।
   - (घ) <u>जलदः</u> नानानदीनदशतानि पूरयित्वा रिक्तोऽस्ति।
   - (ङ) चातकः <u>वने</u> वसति।

4. **अधोलिखितयोः श्लोकयोः भावार्थं स्वीकृतभाषया लिखत -**
   - (अ) तोयैरल्पैरपि .... वारिदेन।
   - (आ) रे रे चातक .... दीनं वचः।

5. **अधोलिखितयोः श्लोकयोः अन्वयं लिखत -**
   - (अ) आपेदिरे .... कतमां गतिमभ्युपैति।।
   - (आ) आश्वास्य .... सैव तवोत्तमा श्रीः।।

6. **उदाहरणमनुसृत्य सन्धिं/सन्धिविच्छेदं वा कुरुत-**

(i) **यथा - अन्य + उक्तयः = अन्योक्तयः ।**
   - (क) .... + ... = निपीतान्यम्बूनि
   - (ख) .... + उपकारः = कृतोपकारः
   - (ग) तपन + ... = तपनोष्णतप्तम्
   - (घ) तव + उत्तमा = ...
   - (ङ) न + एतादृशाः = ...

(ii) **यथा - पिपासितः + अपि = पिपासितोऽपि**
   - (क) .... + ... = कोऽपि
   - (ख) .... + ... = रिक्तोऽसि
   - (ग) मीनः + अयम् = ...
   - (घ) सर्वे + अपि = ...

(iii) **यथा - सरसः + भवेत् = सरसो भवेत्**
   - (क) खगः + मानी = ...
   - (ख) .... + नु = मीनो नु
   - (ग) पिपासितः + वा = ...
   - (घ) .... + ... = पुरतो मा

(iv) **यथा - मुनिः + अपि = मुनिरपि**
   - (क) तोयैः + अल्पैः = ...
   - (ख) .... + अपि = अल्पैरपि
   - (ग) तरोः + अपि = ...
   - (घ) .... + आर्द्रयन्ति = वृष्टिभिरार्द्रयन्ति

7. **उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितैः विग्रहपदैः समस्तपदानि रचयत-**

विग्रहपदानि - समस्त पदानि

यथा- पीतं च तत् पङ्कजम् = पीतपङ्कजम्
   - (क) राजा च असौ हंसः = ...
   - (ख) भीमः च असौ भानुः = ...
   - (ग) अम्बरम् एव पन्थाः = ...
   - (घ) उत्तमा च इयम् श्रीः = ...
   - (ङ) सावधानं च तत् मनः, तेन = ...

प्रश्नकोषः- उत्तराणि

1. **एकपदेन उत्तरं लिखत**
   - (क) सरसः
   - (ख) बकसहस्रम्
   - (ग) चातकः
   - (घ) भ्रमराः
   - (ङ) गगने

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत -**
   - (क) सरसः शोभाः राजहंसेन भवति।
   - (ख) चातकः केवलं पुरन्दरं याचते अथवा वने पिपासितो म्रियते।
   - (ग) यदा सरोवरः सङ्कोचमञ्चति तदा मीनः दीनां गतिं प्राप्नोति।
   - (घ) नानानदीनदशतानि पूरयित्वा जलदः रिक्तः भवति।
   - (ङ) केचित् अम्भोदाः वृष्टिभिः वसुधां आर्द्रयन्ति।

3. **अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -**
   - (क) मालाकारः कैः तरोः पुष्टिं करोति?
   - (ख) भृङ्गाः कानि समाश्रयन्ते?
   - (ग) के अम्बरपथम् आपेदिरे?
   - (घ) कः नानानदीनदशतानि पूरयित्वा रिक्तोऽस्ति?
   - (ङ) चातकः कुत्र वसति?

4. **अधोलिखितयोः श्लोकयोः भावार्थं स्वीकृतभाषया लिखत -**
   - (अ) तोयैरल्पैरपि .... वारिदेन।
   - (आ) रे रे चातक .... दीनं वचः।
   - (अ) भावार्थ- हे माली! भीषण ग्रीष्मकाल की गरमी से थोड़े से ही जल द्वारा आपके द्वारा करूणापूर्वक इस वृक्ष का जो पोषण किया गया, क्या वर्षाकालीन जल के चारो ओर से धाराओं को बरसाने से बादल के द्वारा वह पोषण किया

जा सकता है? अर्थात् नहीं! क्योंकि दिल से किया काम ही ज्यादा फलदायी होता है। मेहनत का फल ही मीठा होता है। दान का नहीं।

(आ) भावार्थ- हे मित्र चातक! ध्यान से क्षणभर सुनो। आकाश में अनेक मेघ है। सभी बरसने वाले नहीं है। कुछ वर्षा से गीला करते है व कुछ केवल गरजते है। अत: सबके सामने दीन वचन कहने का कोई लाभ नहीं है। अर्थात् माँगना भी सभी से नहीं, बल्कि दानवीरों एवं करुण हृदय वालों से ही चाहिए।

5. **अधोलिखितयोः श्लोकयोः अन्वयं लिखत -**

(अ) आपेदिरे .... कतमां गतिमभ्युपैति।।

(आ) आश्वास्य .... सैवतवोत्तमा श्रीः।।

(अ) पतङ्गा परितः अम्बरपथम् आपेदिरे, भृङ्गाः रसालमुकुलानि समाश्रयन्ते । सरः त्वयि सङ्कोचम् अञ्चति हन्त दीनदीनः मीनः नु कतमां गतिम् अभ्युपैतु।

(आ) तपनोष्णतप्तम् पर्वतकुलम् आश्वास्य उद्दामदावविधुराणि काननानि च नानानदीनदशतानि पूरयित्वा च हे जलद! यत् रिक्तः असि तव सा एव उत्तमा श्रीः ।

6. **उदाहरणमनुसृत्य सन्धिं/सन्धिविच्छेदं वा कुरुत**

यथा- अन्य + उक्तयः = अन्योक्तयः

(i) (क) निपीतानि + अम्बूनि = निपीतान्यम्बूनि

(ख) कृत + उपकारः = कृतोपकारः

(ग) तपन + उष्णतप्तम् = तपनोष्णतप्तम्

(घ) तव + उत्तमा = तवोत्तमा

(ङ) न + एतादृशाः = नैतादृशाः

(ii) (क) कः + अपि = कोऽपि

(ख) रिक्तः + असि = रिक्तोऽसि

(ग) मीनः + अयम् = मीनोऽयम्

(घ) सर्वे + अपि = सर्वेऽपि

(iii) (क) खगः + मानी = खगो मानी

(ख) मीनः + नु = मीनो नु

(ग) पिपासितः + वा = पिपासितो वा

(घ) पुरतः + मा = पुरतो मा

(iv) (क) तोयैः + अल्पैः = तोयैरल्पैः

(ख) अल्पैः + अपि = अल्पैरपि

(ग) तरोः + अपि = तरोरपि

(घ) वृष्टिभिः + आर्द्रयन्ति = वृष्टिभिरार्द्रयन्ति

7. **उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितैः विग्रहपदैः समस्तपदानि रचयत-**

	विग्रहपदानि -	समस्त पदानि
(क)	राजा च असौ हंसः =	राजहंसः
(ख)	भीमः च असौ भानुः =	भीमभानुः
(ग)	अम्बरम् एव पन्थाः =	अम्बरपथम्
(घ)	उत्तमा च इयम् श्रीः =	उत्तमश्रीः
(ङ)	सावधानं च तत् मनः, तेन =	सावधानमनसा

अतिरिक्तसम्भावितप्रश्नाः

1. **एकपदेन उत्तरत-**

(क) केन सरसः शोभा न भवेत् ?

(ख) राजहंसेन कानि निपीतानि?

(ग) कस्य कृतोपकारः भविता?

(घ) तरोः तादृशी पृष्टि केन कर्तुं न शक्या ?

(ङ) कः दीनहीनः मानितः ?

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) गगने बहवः के सन्ति?

(ख) चातक! कियत् कालं यावत् श्रूयताम्?

(ग) कः रिक्तः अपि शोभते?

(घ) चातकः कं याचते?

(ङ) वने मानी खगः कः वसति?

3. **विशेषणविशेष्ययोः समुचितं मेलनं कुरुत-**

	विशेषणम्	-	विशेष्यम्
(क)	मानी	-	कृत्येन
(ख)	दीनहीनः	-	खगः
(ग)	केन	-	शोभा
(घ)	निषेवितानि	-	मीनः
(ङ)	या	-	नालिनानि

4. **बहुविकल्पीयाः प्रश्नाः**

समुचितपर्यायपदानि चित्वा लिखत-

(i) **भ्रमराः**

क. भृङ्गाः ख. काकः
ग. मीनाः घ. राजहंसाः

(ii) **इन्द्रम्, सुरपतिम् .**

क. अमात्यः ख. नृपः
ग. पुरन्दरम् घ. वाराम्

(iii) **वनानि**

क. हरितानि ख. निपीतानि
ग. काननानि घ. नलिनानि

(iv) **मेघाः**

क. अम्भोदाः ख. सरसः
ग. अम्बूनि घ. मीनः

(v) **धराम्.**

क. वाराम् ख. वसुधाम्
ग. वसुधा घ. परितः

अतिरिक्तसम्भावितप्रश्नाः- उत्तराणि

(क) बकसहस्त्रेण (ख) अम्बूनि
(ग) सरोवरस्य (घ) वारिदेन
(ङ) मीनः

2. **पूर्णवाक्येन उत्तरत-**

(क) गगने बहवः अम्भोदाः सन्ति।

(ख) चातक! क्षणं श्रूयताम्।

(ग) काननादीनि पूरयित्वा जलदः रिक्तः अपि शोभते।

(घ) चातकः पुरन्दरं याचते।

(ङ) वने मानी खगः चातकः वसति ।

3. **विशेषणविशेष्ययोः समुचितं मेलनं कुरुत-**

Jharkhandlab.com

विशेषणम् - विशेष्यम्

(क)	मानी	–	खगः
(ख)	दीनहीनः	-	मीनः
(ग)	केन	-	कृत्येन
(घ)	निषेवितानि	-	नलिनानि
(ङ)	या	–	शोभा

4. बहुविकल्पीयाः प्रश्नाः

समुचितपर्यायपदानि चित्वा लिखत-

(i) क. भृङ्गाः

(ii) ग. पुरन्दरम्

(iii) ग. काननानि

(iv) क. अम्भोदाः

(v) ख. वसुधाम्

Jharkhandlab.com

JAC वार्षिक माध्यमिक परीक्षा - 2023

विषय - संस्कृत

बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

कुल प्रश्नों की संख्या : 19

Total No. of Questions: 19

पृष्ठों की कुल संख्या: 16

Total No. of Pages : 16

पूर्णांक : समय: 1 घंटा 30 मिनट

Full Marks: 40 Time: 1 Hr. 30 Min.

सामान्य निर्देश : GENERAL INSTRUCTIONS:

1. **प्रश्न पुस्तिका - (B)** के प्रश्न विषयनिष्ठ हैं। यह प्रश्न- सह उत्तर-पुस्तिका है। **प्रश्न पुस्तिका - (A)** (बहुविकल्पीय) का उत्तर देने के बाद ही परीक्षार्थी प्रदत्त स्थान पर प्रश्न-सह- उत्तर-पुस्तिका **प्रश्न पुस्तिका (B)** में उत्तर दें।
2. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में उत्तर दें।
3. कुल प्रश्नों की संख्या 19 है।
4. प्रश्न संख्या 1 से 7 तक अति लघूत्तरीय प्रश्न हैं। इनमें से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दें। प्रत्येक प्रश्न का मान 2 अंक निर्धारित है।
5. प्रश्न संख्या 8 से 14 तक लघुत्तरीय प्रश्न हैं। इनमें से से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दें। प्रत्येक प्रश्न का मान 3 अंक निर्धारित है।
6. प्रश्न संख्या 15 से 19 तक दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं। इनमें से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दें। प्रत्येक प्रश्न का मान 5 अंक निर्धारित है।
7. परीक्षा के उपरांत **प्रश्न पुस्तिका (B)** (प्रश्न-सह- उत्तर-पुस्तिका) वीक्षक को लौटा दीजिए।

सामान्य निर्देशाः

सर्वे प्रश्नाः अनिवार्याः सन्ति।

प्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं संस्कृते एव देयानि। प्रश्न संख्या 1 तः 7 पर्यन्तम् अति लघुत्तरीयाः प्रश्नाः, अस्य कृते 2-2 अंकौ निर्धारितौ। केचन पञ्चानां प्रश्नानाम् उत्तराणि लेखितव्यानि।

प्रश्न-संख्या 8 तः 14 पर्यन्तं लघुत्तरीयाः प्रश्नाः, अस्य कृते 3-3 अंकाः निर्धारिताः। केचन पञ्चानां प्रश्नानाम् उत्तराणि लेखितव्यानि।

प्रश्न-संख्या 15 तः 19 पर्यन्तं दीर्घोत्तरीयाः प्रश्नाः, अस्य कृते 5-5 अंकाः निर्धारिताः। केचन त्रयाणां प्रश्नानाम् उत्तराणि लेखितव्यानि।

अस्मिन् प्रश्न-पत्रे 40 (चत्वारिंशत्) प्रश्नाः सन्ति। प्रत्येकस्य प्रश्नस्य कृते 1 (एकः) अङ्क निर्धारितः अस्ति। प्रदत्तविकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चित्वा लिखत।

खण्ड क (अपठित-अवबोधनम्) - 5

निर्देशः अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा विकल्पेभ्यः उत्तराणि चित्वा लिखत-

"एकस्मिन् तरौ हंसकाकौ निवासं कृतवन्तौ। एकदा ग्रीष्मर्तौ परिश्रान्तः कश्चित् पथिकः धनुर्वाणं समीपे निधाय प्रसुप्तः। क्षणान्तरे तस्य मुखात् वृक्षच्छाया अपगता तन्मुखं तप्तम्। वृक्षावस्थितेन तेन हंसेन पक्षौ प्रसारितौ। तन्मुखे छाया कृता, लब्धनिद्रासुखेन पथिकेन उद्घाटितम्। परसुखम् असहिष्णुः काकः तस्य मुखे पुरीषोत्सर्गं कृत्वा पलायितः। उपरि निरीक्षितम्। तेन सः हंसः दृष्टः। पथिकः क्रुद्धः अभवत्, तेन वाणेन हंसः हतः।"

1. हंसकाकौ कुत्र निवासं कृतवन्तौ ?

(1) पर्वतशिखरे (2) सरोवरतटे
(3) तरौ (4) समुद्रतटे

2. पथिकः कीदृशः आसीत् ?

(1) परिश्रान्तः (2) पिपासितः
(3) प्रमुदितः (4) बुभुक्षितः

3. केन पक्षौ प्रसारितौ ?

(1) मयूरेण (2) हंसेन
(3) कपोतेन (4) वायसेन

4. काकस्य स्वभावः कीदृशः आसीत् ?

(1) सौहार्द्रपूर्णः (2) चञ्चलः
(3) करुणापरः (4) असहिष्णुः

5. 'निधाय' इत्यस्मिन् पदे कः प्रत्ययः प्रयुक्तः ?

(1) ल्यप् (2) क्तवतु
(3) तुमुन् (4) शानच्

खण्ड ख (पठित-अवबोधनम्) - 20

निर्देशः अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि विकल्पेभ्यः चित्वा लिखत-

"विचित्रा दैवगतिः। तस्यामेव रात्रौ तस्मिन् गृहे कश्चन् चौरः गृहाभ्यन्तरं प्रविष्टः तत्र निहितामेकाम् मञ्जूषाम् आदाय पलायितः। चौरस्य पादध्वनिना प्रबुद्धः अतिथिः चौरशंकया तमन्धावत् अगृहणात् च, परं विचित्रमघटत्। चौरः एवं उच्चैः क्रोशितुमारभत्। "चौरोऽयम् चौरोऽयम्" इति। तस्य तारस्वरेण प्रबुद्धाः ग्रामवासिनः स्वगृहाद् निष्क्रम्य तत्रागच्छन् वराकमतिथिमेव च चौरं मत्वाऽभर्त्सयन्। यद्यपि ग्रामस्य आरक्षी एव चौरः आसीत्। तत्क्षणमेव रक्षापुरुषः तम् अतिथिं चौरोऽयम् इति प्रख्याप्य कारागृहे प्राक्षिपत्।"

6. गृहाभ्यन्तरे कः रात्रौ प्रविष्टः आसीत् ?

(1) अहिः (2) मार्जारः
(3) चौरः (4) कपिः

7. अतिथिः केन प्रबुद्धः ?

(1) घोरनादेन (2) शिशुक्रन्दनेन
(3) कोलाहलेन (4) पादध्वनिना

Jharkhandlab.com

8. **चौरः काम् आदय पलायितः ?**

(1) पात्राणि (2) मंजूषाम्
(3) आभूषणानि (4) परिधानानि

9. **वस्तुतः चौरः कः आसीत् ?**

(1) ग्राम- आरक्षी (2) अतिथिः
(3) महाजनः (4) अर्चकः

10. **उच्चैः क्रोशितुं चौरः एव आरभत् ? अत्र कर्तृपदं किम् ?**

(1) आरभत् (2) उच्चैः
(3) चौरः (4) क्रोशितुम्

निर्देशः अधोलिखितं श्लोकं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि विकल्पेभ्यः चित्वा लिखत -

"आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः ।
नास्ति उद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ।।"

11. **मनुष्याणां शरीरस्थितः कः महान् रिपुः अस्ति ?**

(1) दुर्जनः (2) कामः
(3) उद्यमः (4) आलस्यम्

12. **उद्यमसमः कः नास्ति ?**

(1) बंधुः (2) धर्मः
(3) गुरुः (4) तृष्णा

13. **आलस्यम् केषां शत्रुः अस्ति ?**

(1) साधूनाम् (2) मनुष्याणाम्
(3) पक्षीणाम् (4) वन्यजीवानाम्

14. **'अवसीदति' इति पदस्य कः अर्थः ?**

(1) पलायते (2) सुखी भवति
(3) दुःखी भवति (4) प्रकुप्यति

15. **'महान् रिपुः' अनयोः पदयोः 'रिपुः' किम् अस्ति ?**

(1) अव्ययपदम् (2) विशेष्यपदम्
(3) उपमानः (4) सर्वनामपदम्

निर्देशः अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि विकल्पेभ्यः चित्वा लिखत

चाणक्यः - कथं न ज्ञायते नाम ? भो श्रेष्ठिन् । शिरसि भयम्, अतिदूरं तत्प्रतिकारः ।

चन्दनदासः - आर्य । किं मे भयं दर्शयसि ? सन्तमपि गेहे अमात्यराक्षसस्य गृहजने न समर्पयामि, किं पुनरसन्तम् ?

चाणक्यः- चन्दनदास ! एष एव ते निश्चयः ?

चन्दनदासः - बाढम् एष एव मे निश्चयः ?

चाणक्यः - (स्वगतम्) साधु । चन्दनदास साधु ।

"सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जने ।
क इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना विना ॥"

16. **कः चन्दनदासाय भयं दर्शयति ?**

(1) चाणक्यः (2) स्कन्दगुप्तः
(3) चन्द्रगुप्तः (4) समाट् अशोकः

17. **अमात्यराक्षसस्य गृहजनं कः न समर्पयितुम् इच्छति ?**

(1) शिष्यः (2) महाराज नन्दः
(3) सुदर्शनः (4) चन्दनदासः

18. **चन्दनदासस्य तुलना केन अभवत् ?**

(1) पुलस्त्येन (2) भीष्म पितामहेन
(3) शिविना (4) अगस्त्येन

19. **'मंत्री' इत्यर्थे कः समानार्थकः शब्दः प्रयुक्तः ?**

(1) श्रेष्ठिन् (2) अमात्यः
(3) बाढम् (4) प्रतिकारः

20. **चन्दनदासस्य कः दुष्करम् आसीत् ?**

(1) वाणिज्यः (2) अभिमानः
(3) ज्ञानम् (4) निश्चयः

निर्देशः रेखांकितपदेषु प्रश्नवाचकपदानि विकल्पेभ्यः चित्वा लिखत -

21. **करुणापरो गृही तस्मै आश्रयं प्रायच्छत् ।**

(1) कम् (2) कस्यै
(3) कस्मै (4) केभ्यः

22. **स भारवेदनया क्रन्दति ।**

(1) कया (2) केन
(3) कस्मात् (4) कस्य

23. **तत्वार्थस्य निर्णयः विवेकेन कर्तुं शक्यः।**

(1) कथम् (2) कस्य
(3) कस्याः (4) कदा

24. **अरयः व्यायामिनं नोपसर्पन्ति ।**

(1) कुत्र (2) कयोः
(3) काभ्याम् (4) के

25. **तृणानाम् अग्निना सह विरोधो भवति ।**

(1) कदा (2) कीदृशम्
(3) केषाम् (4) केषु

खण्ड ग -(अनुप्रयुक्तव्याकरणम्) 15

निर्देशः अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितपदानां संधिं/विच्छेदं वा चित्वा लिखत-

26. **अयं संसारः विचित्रः अस्ति ।**

(1) सम् + सरः (2) सत् + सारः
(3) सन् + सारः (4) सम् + सारः

27. **वट + छाया ग्रीष्मर्तौ शीतला भवति ।**

(1) वटन्छाया (2) वटच्छाया
(3) वटछाया (4) वटत्छाया

28. **देवर्षि नारदः मर्त्यलोकम् आगतः ।**

(1) देव + ऋषिः (2) देवाः + ऋषि
(3) देव + अर्षि (4) देव + ऋषयः

29. **अयं एकः रमणीयः सरोवरः अस्ति ।**

(1) सराः + वरः (2) सरो + वरः

Jharkhandlab.com

(3) सरः + वरः (4) सरः + वराः

30. जगत् + नाथः विश्वस्य पालकः विद्यते।

(1) जगन्नाथः (2) जगरनाथः
(3) जगलाथः (4) जगन्नाथाः

निर्देशः रेखाकितपदानां प्रकृति-प्रत्ययौ संयोज्य विभज्य वा समुचितं विकल्पं चित्वा लिखत -

31. मार्गे गम् + शतृ कलहं मा कुरु।

(1) गच्छन् (2) गत्वा
(3) गम्यमानः (4) गतवान्

32. बालानां बौद्धिकः विकासः समुपेक्षते।

(1) बुद्ध + इनि (2) बुद्ध + तमप्
(3) बुद्ध + ठक् (4) बुद्ध + मतुप्

33. एतस्याः वाटिकायाः शोभा विचित्रा।

(1) विचित्र + डाप् (2) विचित्र + टाप्
(3) विचित्र + चाप् (4) विचित्र + ङीप्

34. सदाचारं यत्नेन रक्षितव्यम्।

(1) रक्ष् + क्त (2) रक्ष् + अनीयर्
(3) रक्ष् + तुमुन् (4) रक्ष् + तव्यत्

35. शिक्षया जनाः गुण + मतुप् जायन्ते।

(1) गुणाढ्यः (2) गुणवता
(3) गुणवन्तः (4) गुणी

निर्देश : उचित-अव्ययपदं विकल्पेभ्यः चित्वा रिक्त- स्थानानि पूरयत-

36. यत्र धूमः .... अग्निः अपि।

(1) यदा (2) तंत्र
(3) अधुना (4) इव

37. जलं .... जीवनम् असम्भवम्।

(1) नूनम् (2) एव
(3) कथम् (4) विना

38. वृक्षे कपयः .... कूर्दन्ति।

(1) बृथा (2) अत्र- तत्र
(3) इतस्ततः (4) यत्र

39. अहं .... विद्यालयं न गमिष्यामि।

(1) श्वः (2) चित्
(3) खलु (4) इव

40. .... अयोध्यायाः नृपः दशरथः आसीत्।

(1) कुतः (2) उच्चैः
(3) पुरा (4) मा

विषयनिष्ठ प्रश्नोत्तत्राणि-

1-(3) तरौ	2-(1) परिश्रान्तः	3-(2) हंसेन
4.-(4) असहिष्णुः	5.-(1) ल्यप्	6.-(3)चौरः
7.-(4) पादध्वनिना	8.-(2) मञ्जूषाम्	9.-(1) ग्राम-आरक्षी
10.-(3) चौरः	11.-(4) आलस्यम्	12.-(1) बन्धुः
13.-(2) मनुष्याणाम्	14.-(3) दुखी भवति	15.(2)विशेष्यपदम्
16.-(1) चाणक्यः	17.-(4) चन्दनदासः	18.-(3) शिविना
19.-(2) अमात्यः	20.-(4) निश्चयः	21.-(3) कस्मै?
22.- (1) कया?	23.-(2) कस्य?	24.-(4) के?
25.-(3) केषाम्?	26.-(4) सम्+सारः	7.-(2) वटच्छाया
28. - (1) देव+ऋषिः	29.-(3) सरः+वरः	30.-(1) जगन्नाथः
31.-(1) गच्छन्	32.-(3) बुद्ध +ठक्	33.-(2) विचित्र +टाप्
34.-(4) रक्ष्+तव्यत्	35.-(3) गुणवन्तः	36. - (2) तत्र
37.-(4) विना	38.-(3) इतस्ततः	39.-(1) श्वः
40.-(3) पुरा।		

Jharkhandlab.com

JAC वार्षिक माध्यमिक परीक्षा - 2023

विषय - संस्कृत

विषयनिष्ठ प्रश्न-सह-उत्तराणि-

खण्ड क (अति लघूत्तरीयाः प्रश्नाः)

निर्देशः अधोलिखितं गद्यांशं श्लोकं नाट्यांशं च अधीत्य केवलं पञ्चप्रश्नानाम् उत्तराणि एव देयानि (5 x 2 = 10)

(क) गद्यांशः

कश्चिद् कृषकः बलीवर्दाभ्यां क्षेत्रकर्षणं कुर्वन्नासीत् । तयोः बलीवर्दयोः एकः शरीरेण दुर्बल जवेन गन्तुमशक्तश्चासीत्। अतः कृषकः तं दुर्बलं वृषभं तोदनेन नुद्यमानः अवर्तत। सः ऋषभः हलमूढ्वा गन्तुमशक्तः क्षेत्रे पपात । क्रुद्धः कृषीवलः तमुत्थापयितुं बहुवारं यत्नमकरोत् । तथापि वृषभः नोत्थितः । भूमौ पतिते स्वपुत्रं दृष्ट्वा धेनूनां माता सुरभिः नेत्राभ्याम् अश्रूणि आविरासन् ।

पूर्णवाक्येन उत्तरत-

प्रश्न1. कृषकः किं करोति स्म ? 2

उत्तरम्- कृषकः क्षेत्र - कर्षणं करोति ।

प्रश्न 2. वलीवर्दयोः एकः कीदृशः आसीत् ? 2

उत्तरम्- शरीरेण दुर्लभः आसीत् ।

प्रश्न3. धेनूनां माता स्वपुत्रस्य कष्टं दृष्ट्वा किम् अकरोत् ? 2

उत्तरम्- धेनुनाम् माता स्वपुत्रस्य कष्टं दृष्ट्वा नेत्रभायम् अश्रूणि आविरासन् ।

(ख) श्लोकः

" एकेन राजहंसेन या शोभा सरसो भवेत् ।
न सा वकसहस्रेण परितस्तीरवासिना ।। "

पूर्णवाक्येन उत्तरत-

प्रश्न4. एकेन राजहंसेन कस्य शोभा भवति ? 2

उत्तरम्- सरसः शोभा भवति।

प्रश्न5. परितः तीरवासिना केन सरसः शोभा न भवति ? 2

उत्तरम्- परितः तिरवासिना बकसहस्रेण सरसः शोभा न भवति ।

(ग) नाट्यांशः

कुशः अहमपि कुश इत्यात्मानं श्रावयामि ।
रामः अहो ! उदात्तरम्यः समुदाचारः । किं नामभवतोर्गुरुः ?
लवः ननु भगवान् वाल्मीकिः ।
रामः केन सम्बन्धेन ?
लवः उपनयनोपदेशेन ।
रामः अहमत्र भवतोः जनकः नामतो वेदितुमिच्छामि ।
लवः न हि जानाम्यस्य नामधेयम् । न कश्चिद् अस्मिन् तपोवने तस्य नाम व्यवहरति ।

प्रश्न 6. लवकुशयोः गुरोः किं नामासीत् ? 2

उत्तरम्- लवकुशयोः गुरोः नाम वाल्मीकिः आसीत् ।

प्रश्न 7. कयोः जनकस्य नाम तपोवने कश्चिदपि न व्यवहरति ? 2

उत्तरम्- लवकुशयोः जनकस्य नाम तपोवने कश्चिदपि न व्यवहरति ।

खण्ड - ख (लघूत्तरीयाः प्रश्नाः)

निर्देशः अस्मिन् खण्डे केवलं पञ्चप्रश्नानाम् उत्तराणि देयानि (3 x 5 = 15)

प्रश्न 8. अधोलिखितश्लोकस्य अन्वयं मञ्जूषातः पदानि चित्वा सम्पूरयत- 3

गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः
बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः ।
पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः
करी च सिंहस्य बलं न मूषकः ।

अन्वयः -

गुणी गुणं .... (i) ....निर्गुणः न वेत्ति (जानाति) .... (ii) .... बलं वेत्ति निर्बलः न, बसन्तस्य गुणं ....(iii) ....वेत्ति वायसः न, सिंहस्य बलं करी वेत्ति मूषकः न वेत्ति ।

मञ्जूषा - (पिकः, वेत्ति, बली)

उत्तरम्- (i) वेति (ii) बली (iii) पिकः

9. अधोलिखितस्य श्लोकस्य भावार्थं मञ्जूषातः पदानि चित्वा लिखत- 3

"वयोबलशरीराणि देशकालाशनानि च ।
समीक्ष्य कुर्याद् व्यायाममन्यथा रोगमाप्नुयात् ।"

भावार्थः अस्ति यत् आयुः ....(i)...................... स्थानं, कालं, भोजनानि च सम्यक् ....(ii)......................... एव व्यायामः कर्तव्यः अन्यथा व्यायामेन ....(iii)...................... अपि भवितुं शक्यन्ते।

मञ्जूषा- (विचार्य, रोगाः, बलम्)

उत्तरम्- (i) बलम् **(ii)** विचार्य (iii) रोगाः

प्रश्न 10. अधोलिखित-दिनचर्यायां अंकानां स्थाने कालबोधकशब्दं लिखत- 3

(i) रजनीशः प्रातः (6 : 00) .... वादने शय्यात्यागं करोति ।
(ii) सः प्रतिदिन (7 : 15) .... बादने स्नात्वा देवालयं गच्छति।
(iii) सः सायंकाले (5 : 30) .... वादने मित्रैः सह उद्याने भ्रमति ।

उत्तरम्- (i) षड् (ii) सपाद-सप्त (iii) सार्ध-पञ्च

प्रश्न11. वाच्यानुसारं समुचित-विकल्पं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत- 3

(i) छात्राः .... मनसा पठन्ति ।

(क) पाठस्य (ख) पाठाः
(ग) पाठाय (घ) पाठान्

(ii) मया तु दूरदर्शनं ....।

Jharkhandlab.com

(क)	दृश्यते	(ख)	पश्यामि
(ग)	पश्यति	(घ)	पश्यति

(iii) .... **राष्ट्रगानं गायन्ति ।**

(क)	बालको	(ख)	बालकाः
(ग)	बालकेभ्यः	(घ)	वालकैः

उत्तरम्- (i) (ख) पाठान्   (ii) (क) दृश्यते   (iii) (ख) बालकाः

प्रश्न12. अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितपदानि संशोध्य लिखत- 3

(i) <u>**वृक्षेण**</u> वायुवेगेन पत्राणि पतन्ति ।

(ii) इदं <u>**स्थानः**</u> अतीव सुरम्यं प्रतीयते ।

(iii) <u>**सः**</u> नारी अर्द्धरात्रौ कथं विलपति ?

उत्तरम्- (i) वृक्षात्   (ii) स्थानम्   (iii) सा

प्रश्न13. अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितपदानां समासं विग्रहं वा विकल्पेभ्यः चित्वा लिखत - 3

(क) पुरन्दरः 'देवाधिपतिः' कथ्यते

(i)	देवानाम् अधिपतिः	(ii)	देवेभ्यः अधिपतिः
(iii)	देवेषु अधिपतिः	(iv)	देवस्य अभिपतिः

(ख) 'मक्षिकाणाम् अभावः' स्थानमिदम् ।

(i)	अधिमक्षिकम्	(ii)	निर्मक्षिकम्
(iii)	अभिमक्षिकम्	(iv)	बहुमक्षिकम्

(ग) 'रामलक्ष्मणौ' भ्रातरौ आस्ताम् ।

(i)	लक्ष्मणश्च रामः च	(ii)	रामश्च लक्ष्मणौ च
(iii)	रामो च लक्ष्मणो च	(iv)	रामश्च लक्ष्मणश्च

उत्तरम्-

(क) (i) देवानाम् अधिपतिः   (ख) (ii) निर्मक्षिकम्

(ग) (iv) रामश्च लक्ष्मणश्च

प्रश्न14. अधोलिखित-पदानां समानार्थकपदैः सह मेलनं कुरुत - 3

	A		B
(क)	**रसालः**	**(i)**	**मुक्तः**
(ख)	**काननम्**	**(ii)**	**तीव्रगत्या**
(ग)	**चक्षुर्भ्याम्**	**(iii)**	**अचिरम्**
(घ)	**शीघ्रम्**	**(iv)**	**आम्रम्**
(ङ)	**स्वतन्त्रः**	**(v)**	**अरण्यम्**
(च)	**जवेन**	**(vi)**	**नेत्राभ्याम्**

उत्तरम्-

(क)	रसालः	= आम्रम
(ख)	काननम्	= अरण्यम
(ग)	चक्षुर्भ्याम्	= नेत्राभ्याम्
(घ)	शीघ्रम्	= अचिरम्
(ङ)	स्वतंत्रः	= मुक्तः
(च)	जवेन	= तीव्रगत्या

खण्ड 'ग' (दीर्घ उत्तरीयाः प्रश्नाः)

निर्देशः अस्मिन् खण्डे केवलं त्रयाणां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत- (5 x 3 = 15)

प्रश्न15. अनुपस्थितिहेतोः प्रधानाध्यापकं प्रति लिखिते आवेदन-पत्रे रिक्तस्थानानि प्रदत्तशब्दसूचीसहायतया पूरयत- (10x1/2=5)

.... **(i)**........................

प्रधानाध्यापक महोदयाः,

राजकीय उच्च विद्यालयः राँची ।

विषयः- अनुपस्थितिहेतोः क्षमायाचनायै आवेदन-पत्रम् ।

महाशयः,

सविनयं ....(ii)...................... इदम् अस्ति यत् ....(iii)................. ज्वरेण ....(iv).............. आसम् । अस्मात् ....(v)................ अहं विद्यालयम् आगन्तुम् ....(vi).........अस्मि । वैद्येन पूर्णविश्रामं कर्तुं ....(vii).................. अयच्छत् । अत एव त्रयाणां दिवसानां .... (viii).................... प्रदाय अनुगृहणन्तु ....(ix)................. । एतदर्थम् अहं भवताम् सदैव ऋणी भविष्यामि ।

धन्यवादाः ।   भवतः ....(x)............... छात्रः

चन्द्रकान्तः

कक्षा दशमी, क्रमांकः 16.

मञ्जूषा - (पीडितः, अवकाशं, निवेदनम्, भवन्तः कारणात्, सेवायाम्, आज्ञाकारी, अहम्, परामर्शम्, अक्षमः)

उत्तरम्- (i) सेवायाम् (ii) निवेदनम् (iii) अहम् (iv) पीडितः (v) कारणात् (vi) अक्षमः (vii) परामर्शम् (viii) अवकाशम् (ix) भवन्तः (x) आज्ञाकारी

प्रश्न 16. अधोदत्तं चित्रं दृष्ट्वा प्रदत्तमञ्जूषापदसहायतया संस्कृते पञ्चवाक्यानि रचयत । 5

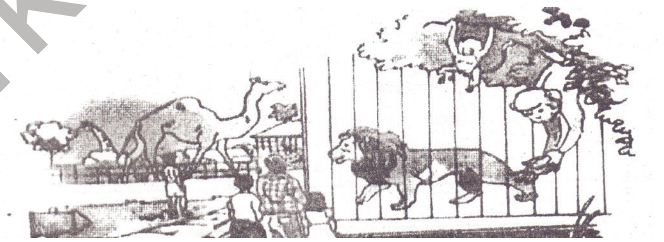

मञ्जूषा- (जलाशये, बालकाः, वर्तको वनमानुषः सन्ति, जन्तव, सिंहः, ग्रीवाम्, लम्बते, पञ्जरिकायाम्, हर्षिताः, उष्ट्रः, जन्तुशाला)

उत्तरम्- (i) इदं चित्रं जन्तुशालायाः अस्ति।

(ii) चित्रे पञ्जरिकायां जन्तवः सन्ति।

(iii) चित्रे वनमानुषः, सिंहः, उष्ट्रः च सन्ति।

(iv) जलाशये द्वौ वर्तकौ तरतः ।

(v) बालकाः जन्तुशालां दृष्ट्वा हर्षिताः भवन्ति।।

प्रश्न17: 'अस्माकं राज्यम्' विषयमधिकृत्य प्रदत्तमंजूषापदसहायतया संस्कृते पंचवाक्यानाम् एकम् अनुच्छेदं लिखत- 5

मञ्जूषा- (राजमार्गः, झारखण्डराज्यम्, औद्योगिकम्, आरोग्यशालाः, राजधानी, उन्नतिपथम्, शिक्षालयाः, जलप्रपाताः, कार्यालयाः, रमणीया, प्रकृतिः, मुख्यमंत्री, सौविध्यम्)

उत्तरम्- (i) अस्माकं राज्यं झारखंड-राज्यं वर्तते।

(ii) अस्य राजधानी राँचीनगरम् अस्ति ।

(iii) अत्र अनेके जलप्रपाताः सन्ति ।

(iv) अत्र प्रकृतिः रमणीया अस्ति।

(v) अस्मिन् राज्ये राजमार्गाः, शिक्षालयाः च सुव्यवस्थिताः सन्ति।

प्रश्न 18: अधोलिखितवाक्येषु रेखांकितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं- 5

(i) सः <u>कृच्छ्रेण</u> भारम् उद्वहति ।

(ii) <u>धेनूनाम्</u> माता सुरभिः आसीत् ।

(iii) <u>अरयः</u> व्यायामिनं न अर्दयन्ति ।

(iv) <u>प्रकृत्याः</u> सन्निधौ वास्तविकं सुखं विद्यते ।

(v) <u>तत्वार्थस्य</u> निर्णयः विवेकेन एव कर्तुं शक्यः ।

उत्तरम्- (i) केन ? (ii) कासाम्/केषाम् ? (iii) के ? (iv) कस्याः ? (v) कस्य ?

Jharkhandlab.com

प्रश्न19. अधोलिखित-वाक्यानि कथाक्रमानुसारेण पुनः लिखत-

(i) मयूरः कथयति - 'स्थितप्रज्ञ' इति व्याजेन बराकान्मीनान् छलेन अधिगृह्य क्रूरतया भक्षयसि।

(ii) सिंहः क्रोधेन गर्जति अहं वनराजः, किं न भयं जायते ?

(iii) सर्वे जीवाः प्रकृतिमातरं प्रणमन्ति।

(iv) वानरः वदति राजा तु रक्षकः भवति परं भवान् तु भक्षकः।

(v) एकः सिंहः सुखेन विश्राम्यते तदैव एकः वानरः आगत्य तस्य पुच्छं धुनोति।

उत्तरम्- (1) (v) एकः सिंहः सुखेन विश्राम्यते तदैव एकः वानरः आगत्य तस्य पुच्छं धुनोति।

(2) (ii) सिंहः क्रोधेन गर्जति अहं वनराजः, किं न भयं जायते ?

(3) (iv) वानरः वदति राजा तु रक्षकः भवति परं भवान् तु भक्षकः।

(4) (1) मयूरः कथयति 'स्थितप्रज्ञ' इति व्याजेन वराकान् मीनान् छलेन अधिगृह्य क्रूरतया भक्षयसि।

(5) (14) सर्वे जीवाः प्रकृतिमातरं प्रणमन्ति।

Jharkhandlab.com

jharkhandlab.com

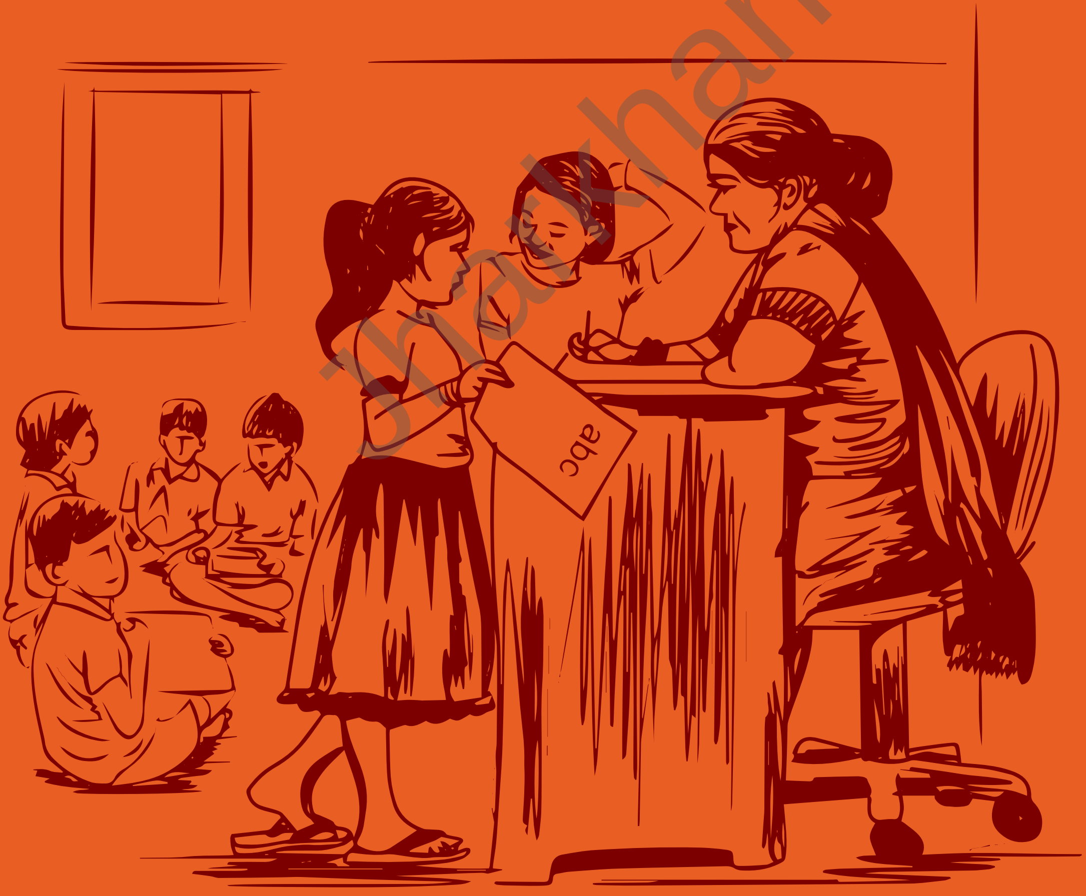

झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi